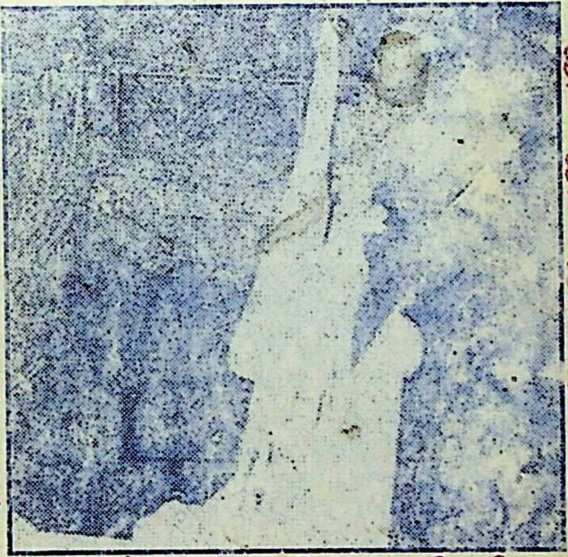
श्री पञ्चस्तवी तथा दुर्गासप्तशती का चौथा अध्याय

श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में अर्थ सहित



अमृत कुण्ड पुखरीबल हारीपर्वत

रचियता :-

स्व. श्री जिया लाल सर्राफ (दर)

अमृत कुण्ड पुखरीबल हारीपर्वत

प्रकाशक :- शाखा : मकान नं.-169, सेक्टर 4, एस. ओ. आई. लेन, पम्पोश कालोनी, जम्मू

मुद्रक :- दुर्गा प्रिंटिंग प्रेस, पुराना जानीपुर, जम्मू फोन:539863

ॐ

शक्ति रहस्य

संसार में किसी भी कार्य में हाथ डालने से पहले शक्ति की आवश्यकता है। जब तक "शक्ति" जो जीव को अपने ही अन्दर मौजूद है। उस शक्ति को काम में न लावे। किसी काम में सफलता न होती है और न होगी।

जीव को अपनी शक्ती का ज्ञान नहीं है। सब पदार्थों में अपनी अपनी शक्ती अपने अन्दर है। जीव में शक्ती का भण्डार है। जिस तरह लकड़ी के अन्दर आग छुपी हुई हैं। और लकड़ी को मालूम नहीं कि मुझ में आग की शक्ति अन्दर है। जब इस की शक्ती 'आग' प्रकट हो कर बाहर आती है तो पदार्थों को भस्म कर देती है तो लकड़ी अपने असली 'आग' के स्वरूप को प्रकट करती है। इसी तरह जीव के अन्दर शक्ती का भण्डार है और वह शक्ती जीव के अन्दर है। उस को मालूम नहीं। कि मैं क्या हूँ, उस शक्ती से जैसा चाहें अपनी अवस्था को बना सकते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि, मुन्नी महातमाओं में शक्तियां और सिद्धियां थीं। वह शक्तियां हम में भी हैं. (पुरपार्थ) पुरुपार्थ करने की जरूरत हैं। पुरुषार्थ का मतलब है, (पुरुप-अर्थ) पुरुप का धन। जब जीव पुरुपार्थ करें, और दृढ रहें तो उस महा शक्ति को उजागर कर सकता है। वह महाशक्ती जो जीव के अन्दर है। उसको परा शक्ति, ज्ञान शक्ति, क्रया शक्ति, यच्छा शक्ति, चित शक्ति वगैरः २ कहा गया है। इस महांन शक्ति को जगदम्बा (जगत् माता), जगत जननी वगैरः वगैरः नामों से कहा गया है। और इन्हीं नामों से शक्ति की पूजन अर्चन किया जाता है। सारा जगत शक्ती से ही बना हैं और बनाया जाता है। तमाम ईजाद जो जगत में बने हैं। और नये नये ईजाद होते हैं। शक्ति ही उनका मूल कारण है। शक्ती के सिवा कुछ नहीं बन सकता।

भवानी सहस्रनाम में महेशंकर और नन्दीगण का सम्वाद लिखा है

नन्दीगण शंकर से पूछता है। महाराज मुझे प्रश्न है। कृपा करके मुझे प्रश्न का उत्तर दीजियें।

आप जगत के स्वामी होकर आप आँखें बन्द करके सदा किस का स्मरण करते हैं और किस के ध्यान में सदा रहते हैं। क्या आप से बढ़कर कोई और ऊपर भी है। जिसका आप ध्यान करते हैं। तो शंकर उत्तर देता हैं। हे नन्दीगण सुनो! यह रहस्य है। तीन गुण वाली श्री शक्ती नाम की शक्ती मेरे अन्दर है उसी के बल से में इस संसार को पैदा करता हूँ, पालता हूँ और उसी में लीन होता हों। उसी के बल से में जगत, पहाड़ नदियां समन्द्र जो भी संसार में देखते हो। बनाता हूं। यह सब जगत उसी शक्ति का विकास है। उसी शक्ति का ध्यान करने से अर्चन करने से सब सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं इसी लिए इसी का सदा स्मरण करता हूँ। हर एक मनुष्य में यह देवी रूप शक्ती छुपी है और इस को जाग्रत करने की आवश्यकता है।

आपको मालूम होगा कि हम जब बच्चे थे तो हमारी माता बचपन में हमको इसी शक्ती माता के स्वरूप का बीज डालती थी और कश्मीरी भाषा मे हमको बार बार कहती रहती थी। "कश्मीरी में" "जेन माज्य जूनूय, अन्गान अन्गन ज़ित तँ जीव यिम कस गनेयि, राय यस गनेयि, रायि क्या चुतुय खसवुन गुर वसवुन्य नाव तथि क्यय वछुस व तुन कुनुय, तति धुछिम च्छुटूज मुदूज मामन्ये हना तमि चुतनम म्यव टूर, सुय लदुम जजीरे, जजीर लजिम नचने, काव लगिम धुछिने, गान्ट लजिम असने, मु कुस म्योन कुल तारकुय।" याने माता "जून" याने प्रकाश जीतना है। प्रकाश किया है। अन्ग अन्ग में याने हर एक में चित और जीव जानना है वह किसको प्राप्त हो : जिसको राय यानि खयाल दृढ होता गया राय याने खयाल के दृढ़ता ने किया दिया। चढ़ने के लिए घोड़ा और उतरने के लिये किश्ती (याने प्राणायाम)। उसी किशती से उतर गयी। "तून" यानि नाभिस्थान के तरफ वहां मैंने देखा, छोटी मोटी कुण्डलिनी उसी ने दिया मुझे "गी" भरतन में- वह मैंने अन्दर डाला और मुझको सारा जगत अपना ही स्वरूप दिखाई दिया। लोगों ने हंसा, वह कौन मेरा, जो मेरे कुल का तारक होगा माता अपने पुत्र को बचपन से ही उसको यह खयाल रूपी बीज डाल देती थी। कि हे पूत्र तुम्हारा कर्तव्य है। अपने कुल का तारक बनना

यह उपदेश माता सबसे पहले अपने बच्चे को देती थी। ताकि यह बच्चा बड़ा होकर अपने कुल का तारक बनेगा। पञ्चस्तवी के पहले तव में दो श्लोकों में इसी का निर्णय किया गया है।

यहाँ कश्मीर में शक्ति उपासना ही प्रचलित थी जिस वक्त श्री शंकराचार्य महाराज बुद्धमत को खन्डन् करते कश्मीर पहुंचे- तो उस वक़्त यहाँ श्री अभिनवगुप्त जी शक्तिमत के आचार्य थे। जब श्री शंकराचार्य जी उनके पास शास्त्रार्थ करने आये। श्री शंकराचार्य जी शिव के उपासक थे। शक्ती को नहीं मानते थे। श्री अभिनवगुप्त जी ने उन को कहा— यह जगत शक्ति का विकास हैं। सब में शक्ती हैं' उस शक्ती का विकास ही यह सारा संसार हैं। पञ्चस-तवो के पहले तव के पहले तीन (३) श्लोकों में श्री कुण्डलिनी शक्ती का वर्णन किया गया है। साड़े तीन वार लिपटी हुई वह छोटी मोटी कुण्डलिनी जिस को जाग्रत हो। तो वह जन्म मरण से छूटता है। उसको दूसरा जन्म प्राप्त नहीं होता वह मुक्त हो जाता है।

श्लोक :— सन्सार कुहरादऽस्मात् निगन्तव्यं स्वयं बलात्
पौर्षं यतनमाश्रत्य हरिणो वारि मञ्जरात ॥

अर्थ : — यमि कठिन्नि संसारुकि जिसी मञ्ज हयुर पनने बल किन्न छि नीरिथं ह्यकान
पुरुषार्थं पननि यत्न सूति, यिथ पाञ्य नूह पञ्जर मञ्ज छुय नेरान

श्लोक :— सारेण पुरुषार्थेन स्वेनैव गरुडध्वज
कश्चितइव पुमानेव पुरुषोतमतां गता ॥

अर्थ :— पनने पुरुषार्थं क जोरः किन, जीव ति छुय पानः नारायण बनान
पुरुषन मञ्जआसान म्याल काँह पुरुष, युस पुरुषोत्तम भावस प्यठ छु वातान

अपनी शक्ति के बगैर उपासक को परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।

श्लोक :— आपद्वनमऽननतोहा, परिपल्लविता कृति
पुरुषार्थं क्रकच च्छिन्नं, नैव भूयः परोहिति ॥

अर्थं :— आपदा रूपी युस अन्तरुस जंगुल, फलमति शकलि युस बोजन इवान
पुरुषार्थं कि लिश्री सूत्य चटि चटि, यि आपदा जन्गल पतः छुनः खसान।

" अयमात्मा शक्तिहीने न लभ्यः "

अर्थं :— शक्तिहीन को परमात्मा प्राप्त नहीं होता, और जन्म मरन से छुट नहीं सकता।

इसलिए शक्ति की उपासना करनी चहिये। चित्त शक्ति पूर्ण प्रेम स्वरूप है। और सर्व व्यापक है। चित्त शक्ती के प्रसन्नता के लिये ख्वाहिश, लोभ, क्रोध और अहंकार रूपी मस्त को भक्ती रूपी तलवार से काटकर शक्ती माता के चर्ण कमलों पर अर्पण करें तमाम प्राणियों से प्रेम उत्पन्न करें अपने स्वरूप को औरों में देखें और तमाम प्राणियों के स्वरूप को अपने में देखें। भेद भाव को हमेशः के लिये छोड दें। अपने जैसा औरों को आत्मवत समझें।

बालक, यौवन, वृद्ध स्त्री, राजा, साधू, पापी, मुर्ख, विद्ववान वगैरह सब के उपर प्रेम पूर्वक एक नजर मे देखें। शुद्ध विचार को ही निरंतर अन्तःकर्ण में उदय होने दें अशुद्ध विचार को पास मत आने दें। शुद्ध विचार और शुद्ध-आचरण का पालन करने से शक्ति माता प्रस्न्न होती है। शक्ति माता को ही प्रसन्न करना है। इसलिए शक्ति माता का ध्यान करें। उपासना करें। शक्ति ही जींवन है। शक्ति ही सत है शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही सब कुछ है। शक्ति ही की सर्वत्र आवश्यकता है। शक्तिशाली बनें, भलवान बनें वीर बनें, निर्भय बनें और स्वतन्त्र बनें।

इस मास और रक्त रूपी जिस्म में जिसको शरीर कहते हैं। आप के लिए एक रथ है। जिस पर चढ़कर आप कहीं भी पहुच सकते हो। इस शरीर रूपी रथ को काम में लावें। इस शरीर रूपी रथ के जरिये वैकुण्ठ पहुंच सकते हो। कायरता छोड कर सजीव बने। आपके अन्द्रर शक्ति का भण्डार है आपके जीवन का उद्देश्य, विशेष जीवन को प्राप्त करने का है।

जिया लाल सराफ

समाप्तम

ॐ

महाराज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्नाम्।

ॐ

प्रार्थना

माज्य भवान्य छुम म्य बुड च्यानि आश
म्यति भोजतम च जारी
छुस पथर प्योमुत तुलुम थुद कासतम म्य लाचारो।
पाद्य सेवन करह बुज्य ब चोन लगै पादन चि पारी
ध्यान दारः त्रोन हृदयस मञ्ज जन बिंहित च तिलकधारी
बुजय ब गिवः च्यानि गुण त लक्षण काशिरिस मञ्ज सारी
पादनूय च्यानिन ब लागै लोल पोश चारि चारी
च्यानि दर्शन बापत म्यि गोम यचकाल प्रारि प्रारी
हावतम मुख कासतम म्य जन्म जन्मन हूंज खारी
कुर म्य पञ्चस्तवी तरजमः काशिरिस मञ्ज जारी
युथ उपकार वाति भक्तिन म्यति बनि च्यानि यारी॥

ॐ

ध्यान

सृष्टौसमस्थापनायतुऽपहरण विधौ मोहएनौग्रहीपि
सर्वेषामऽर्गलानाम् निज महिमवशाद ऽक्रमेनैवयालम
नित्यं क्रीडा प्रसक्ता रचयति सकलं स्वातम शक्त्या प्रपंचम
सा नः स्त्रानाय भुयादऽभिमत फलदा भद्रकाली च काली ॥

युसः पननि महिमा किन्य करान सृष्टी ध्यती संहार
युस दीवान मोह तमि निश युसः पुत कडान
क्रमः रस्तुय सारिनूः वन्दिशन युसः
मुचरावनस प्यठ छय साम्रथवान
सुयि भद्रकाली कल्याण स्वरूप सुस
रछितन पसि कांछिमति फल भासितन भस्य दीवान ।

ॐ नमः त्रिपुर सौन्दर्यं ॥

—: लघुस्तवः :—

ॐ ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती मध्ये ललाटं प्रभां
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगौरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः ।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः सदाहः स्थिता
छिन्द्यान्नः सहसापदैस्त्रिभिरघं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥१॥

इन्द्राज सून्ज़ हिश कमान छक दारवुन्य ही भवानी
मन्ज ललाटस गह: चि चमकान दीप्ति चे शोभानी
सासः वद्य सिर्य भयि चन्द्रमः जन च्य फुलमति चोपारी
त्रिभुवनस योहय चोन ज्योति रूप कासि प्रथ कौंसि खारी
युहोय ध्यान चोन माता त्रुपरामि हृदयस मन्ज म्यि रोज़िवन
युथ व बनहा परिपूर्ण सत् चित् आनन्द गण
चटितनम पापन म्यान्यन करितनम तिछ म्य जानी
सरस्वती हुन्द प्रसाद बनितनम यूथ म्यि खुलहे वाणी । ॥१॥

या मात्रा त्रपुसी लता तनुल सत्तन्तुस्थिति स्पर्धिनी
वाग्बीजे प्रथमेस्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम् ।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पर्शन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नराः ॥२॥

युस ज़ाविज तुरेली लन्जी हन्जि तारि हिश यथ छु फँलाव
साढ्त्रिवार ज़ाविज वलिथ यस कुण्डलिनी शक्ति छु नाव
बीज अक्षरस मन्ज कला युसः ठीकित छि आसानि
सुय कला जगत पैदा करनस आसवञ्य छय उद्योगी
अमिकुय ध्यान युस मनुष्य जानि, करसना करि सु सपद्यं
गर्भ भावस छुरि मावस अद कर बनि ब्यङि मनुष्य ॥२॥

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तु सहसा ऐ ऐं इति व्याहृतं
येनाऽऽकूत वशादऽपीहवरदे बिन्दुं विनाप्यक्षरम् ।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे
वाचः सूक्ति सुधारसद्रवमुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात ॥३॥

ही देवि युद कान्ह खोफनाक चीज वुछित जल - जल
करि ऐ ऐ बिन्दु रुस्तुय सपदि मतलब तस ती हुल
यियि मुजरा तसति मन्त्र बनि तस चोन अनुग्रह
नेरि वाणी तसन्दि मुख निश छटि अमृत कुय खिहः ॥३॥

यन्नित्ये ! तव कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद्बुधश्चेद्भुवि ।
आख्यानं प्रतिपर्व सत्य तपसो यत्कीर्तयन्तोद्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पद प्रणयितां नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम् ॥४॥

ही नित्यरूपी दोयुम मन्त्र चोन कामः राज नाव आसुयुन
सुय मंत्र निष्कल बनिथ काँह पृथ्वी प्यठ छु जानवुन
सुय गव सारसोत बीज अक्षर सततप ही अ़प छि परान
उतम परवन प्यठ ब्राह्मण अम्युक व्याख्यान छि करान
वातनाविथ ऊँ चि जाये प्यठ यी मन्त्र उच्चारण करान ॥४॥

यत्सद्यो वचसां प्रवृत्ति करणे दृष्ट प्रभावं बुधै
स्तार्तीयीकमहं नमामि मनसा त्वद्बीजमिन्दु प्रभम् ।
अस्त्वौर्वोपि सरस्वतीमऽनुगतो जाड्याम्बुविच्छित्तये
गौः शब्दो गिरि वर्तते स नियत योगं विनाऽसिद्धिदः ॥५॥

त्रियमि बीज अक्षरुक महिमा वाणी खुलनस प्यठ दाना वुछान
तथ अक्षरस चन्द्र दीप्ति सुसतिस छुस व मन किन प्रणाम करान
स्वरूप यनिथ गु योग धारनायि रुसतुय सिद्धि दिवान
मूर्ख रूपी पान्यिस गालन वापत वाडव नामी अंगन बनान ॥५॥

एकैकं तव देवि बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वास्थितं व्युत्क्रमात् ।
यं यं काममऽपेक्ष्य येनविधिना केनापि वा चिन्तितम
जप्त वा सफलीकरोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम् ॥६॥

ह्री देवी युस परि चोन बीज अक्षर युद कुनुय
दोप रुस या दोप सुस या उल्ट स्युद या ब्योन ब्योनुय
यमि यमि कामनायि वापत युस मनुष्य आसिय जपान
तस मनुष्यस भव सरस मञ्ज सारी मतलब छिय नेरान ॥६॥

वामे पुस्तक धारिणीमऽभयदां साक्षस्रजं दक्षिणे
भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरां कर्पूर कुन्देज्ज्वलाम् ।
उज्जृम्भाम्बुज पत्रकान्त नयन स्निग्धप्रभालोकिनीं
ये त्वामऽम्ब न शीलयन्ति मनसा तेशां कवित्वं कुतः ॥७॥

खोवरिस अथस मञ्ज च्ये पुस्तक दोरमुत ह्रीं भवानी
दछिनिस अथस जपमाल व्यथि सूत्य च अभय दिवानी
ब्याख अथ चोन पम्पोश जन भक्तिन वर दिवानी
फुलिमत्य पम्पोश नेत्रव जन च भक्तिन वुछानी
युस यि ध्यान करि चोन अम्बा मन तस प्रसन्न बनानी
आसि कांह सु युथ जगतस मंज तस छि दाना बनानी ॥७॥

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीक पटल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
सिञ्चन्तीमऽमृत द्रुवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम ।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षर पदा निर्याति वक्त्राम्बुजा
तेषां भारति ! भारती सुर सरित्कल्लोललो लोमिवत् ।८॥

युस सफेद पमोश डल पाठ्य खुश च्ये दीप्ति वुछानी
वपुंन करान अमृतकुय छट तगिचिय ईवानी
युस यि ध्यान करि ब्रह्माण्डस मञ्ज छि तस नेरानी
बे रोक पाठ्य तसन्दि मुख निश सरस्वती हूंज वाणी ॥८॥

ये सिन्दूर पराग पुञ्जपिहितां त्वत्तेजसा द्यामिमा
मुर्वी चापि विलीनयावकरस प्रस्तारमऽग्नामिव ।
पश्यन्ति क्षणमऽप्यऽनन्यमनसस्तेषामऽनङ्गज्वर
क्लान्तास्त्रस्त कुरङ्ग शावकदृशो वश्या भवन्ति स्फुटम् ।

चानि तीज किन युस अख वुछि सिन्दुरी वरियूय आकाश
पृथ्वी लाछी रंग फछिमचि वुछि आसिस मनस वास
न डलवन्य मनः क्षण मात्रस युस यि ध्यान दारानी
सारिय शक्ति त्रिय रूप बनिथ तिमन छि काबू यिवानी
ति । शक्तियि यिमन कामदेव तीर सूत्य बन्द करानी
तिय पाठ्य यिथ खूचिमूत्य मृग बच कांह छुय रटानी ॥९।

चञ्चत्काञ्चनकुण्डलाऽङ्गद धरामाऽबद्ध काञ्ची स्रजम्
ये त्वां चेतसि तद्गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम् ।
तेषां वेश्मसु विभ्रमादऽहरहः स्फारीभवन्त्याश्चिरं
माद्यत्कुञ्जरकर्णताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः ॥१०॥

चमकवूनिं मुन मुक्त कनवाजि मछ बन्द च लागानी
सुन सन्ज़ तागूर प्रजलवुन्य छिख च कमरस गन्डान
युस यि ध्यान चोन मंज़ मनस करि तथ्यि प्यठ युस लगानी
तस रोज़ि शान शौकत घरस चेर तामत लक्ष्मी
सु लक्ष्मी युस मदहृसि कनकि हृरकूच पाठ्य चंचल आसानी
सारीय सम्पदायी तस पुरुषस करार करिथ छि रोज़ानी ॥१०॥

आर्भठ्याशशि खण्ड मंडित जटा जूटां नृमुण्डस्रजं
बन्धूक कुसुमारुणाम्बर धरां प्रेतासना ध्यासनीम्
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामाऽपीनतुङ्गस्तनीं।
मध्ये निम्नवलित्रयाङ्कितवतुं त्वद्रूप संवित्तये ।११।

शोभवन्य चानि जट मुकट नाल्य मनुष्य कलः माल सुस
बन्धूकः पोश रंग सुर्ख पोशाक तलः मुर्दः आसन सुस
कमरस तागूर चतुर्भुज त्रिनेत्र च दारानी
चोन स्वरूप जानून बापत यि ध्यान भक्ति छि सुरानी; ॥११॥

जातोऽप्यल्प परिच्छदे क्षितिभुजां सामान्य मात्रे कुले
निःशेषावनि चक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः।
यद्विद्याधर वृन्द वन्दित पदा श्री वत्स राजोऽभवत
देवि! त्वचचरणाम्बुज प्रणतिजः सोऽयं प्रसादोदयः ॥१२॥

कांह राजा मामूली कुलस मञ्ज़ आमि ज़ामुत
कुल पृथ्वी प्यठ करान आसि राज आसिन प्रोवमुत
तस चक्र वर्तंस पादन देवता छि पूज़ानी
छु महिमा तस चानी पाद्य पूज़ाये हूंज महरबानी ॥१२॥

चण्डि ! त्वच्चरणाम्बुजार्चनविधौ बिल्वी दलोल्लुण्ठनः
त्रुट्यत्कण्टक कोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः ।
ते दण्डाङ्कुश चक्रचाप कुलिश श्रीवत्स मत्स्याङ्कितै-
र्जायन्ते प्रथिवीभुजः कथमिवाम्भोज प्रभैः पाणिभिः ॥१३॥

ही चण्डी चानी चरण पूजाई प्यठ युस अनानी
व्यल पोश चटय चटय कण्डि सूत्य अथ यस छिय छिनानी
टोंग त तीर कमानी हुन्य निशान यस कण्डि खश सूत्य वसानी
तिय अथ सुस पुरुष बयि जन्म राज महाराज बनानी ॥१३॥

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्य मध्वासवैः
त्वां देवि ! त्रिपुरे ! परापरमयीं संतर्प्य पूजाविधौ ।
यां यां प्रार्थयते मनःस्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवम्
तां तां सिद्धिमऽवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृता ॥१४॥

ब्रह्मण राज वैश या शुद्र चानी पूजा करानी
दुध ग्यव माछ शराब पूजायि किन चे अर्पन करानि
श्रद्धायि किन यि केंछा मंगन छक ज़रूर तिमन दिवानी
भे रोक पाव्य विघ्न रुस्तुय सिद्धी सु प्रावानी ॥१४॥

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे
त्वतः केशववासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम् ।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेप्यमी
सा त्वं काचिदऽचिन्त्य रूपमहिमा शक्तिःपरा गीयसे ॥१५॥

ह्री माता त्रिभुवनस मंज शब्द रूप च़ आसानी
जगतस मन्ज़ नाव चोनुय सरस्वती छिय वनानी
च्यिय निश केशव इन्द्राज देवता प्रकट बनानी
कल्पान्तस ब्रह्मादिक च्यिय निश लय गछानी
कुस्तां्य न सुरनी महिमाह: सुसतिस थोज शक्ति छय वनानी ॥१५॥

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्मवर्णास्त्रयः।
यत्किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
तत्सर्वं त्रिपुरीति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः ॥१६॥

दीवन मन्ज़ त्रिनवय देव चूय, अग्नन मन्ज त्रि अग्न चूय
शक्ति मन्ज़ त्रि शक्ति चूय, सुरन मंज त्रिनवय सुर चूय
वरणन मंज़ त्रि वरण चूय गङ्गा, जमुना, सरस्वती चूय
भू भुवः स्वः गायत्रिय चूय, सत् चित् आनन्द चूय
यि केंछा नियम त्रिगुण स्वरूप, सोरुय एत पत पकान चेर्यव ॥१ ॥

लक्ष्मीं राज कुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करीमध्वनि
क्रव्यादद्विप सर्पभाजि शवरीं कान्तार दुर्गे गिरौ।
भूत प्रेत पिशाच जम्बुकभये स्मृत्वा महाभैरवीं
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोय प्लवे ॥१७॥

राज घरण मन्ज च लक्ष्मी जय च मंज रण भूमी
उल्ट वति कल्याण रूपी खोफनाक जानवरण मंज शिकारो चूय
कोहन प्यठ छिक च़ दुर्गा पिशाचन निश भैरवी
यिम उलट जायन ध्यान चोन सुरन तिमन च आपदा दूर करानी ॥१७॥

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातङ्गी विजयाजया भगवती देवि शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शङ्कर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता कुमारी त्यसि ॥१८॥

माया चूय कुण्डलिनी चूय क्रिया मधुमती चूय
काली चूय कला चूय मालिनी मातङ्गी चूय
विजया चूय, जया चूय, इखतियार वाजिन्य चूय
चित स्वरूप चूय सामर्थ चूय शाम्भवी शक्ती चूय
शंकर सून्ज द्राठ छख चूय सरस्वती भैरवी चूय
ह्रीम शुक्लि परऽपर त्रिपुरा माता इम रुप चूय ॥१८॥

आई पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रि क्रमाद्यक्षरै
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च तैस्तैस्वरै ।
नामानि त्रिपुरे ! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ॥१९॥

'अ' प्यठ सारिनय अक्षरन दुयि त्रिय क्रमः मिलनाविथ
'क प्यठ क्ष' तान्य शब्दः रलाविथ नाव चानि बनावथ
ही त्रिप्राई वुह (२०) सास नाव चानि रहस्य रुप. बनानी
ही भरैव पत्नी तिमन रहस्य नावन ब प्रणाम करानी ॥१९॥

बोद्धव्या निपुणं बुधैःस्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्गतं
भारत्या त्रिपुरेत्यनन्य मनसो यत्राद्यवृत्ते स्फुटम ।
एक द्वित्रिपदक्रमेण कथितं स्त्वत्पाद संख्याक्षरै-
संवोद्धार विधिर्विशेष सहितः सत्सम्प्रदाया मितः ॥२०॥

जाननी छुय गाटल्यन यी तव चिय कुन मन लगाविथ
चानिन पदन हुन्धि शुमार अक्षरव किन मिलनाविथ
गोडन्यकि दोयिमी त्रयमी पद क्रम मन्त्रोदार बनाविथ
वुन म्य संप्रदाय सुस यि तव च्यि कुन मन ठीकराविथ ॥२०॥

सावद्यं निरवद्यंऽस्तु यदि वा किं वानया चिन्तया
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्याऽस्ति भक्तिस्त्वयि।
संचिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायमानं हटात्-
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मिन्यापि ध्रुवम् ॥२१॥

निन्दाई सुस या निन्दाई रुस फिकिरा अमिच त्राविथ
युस यि स्तोत्र कांह मनुष्य परि आस्यस भक्ति चानी
पननिस पानस लोचर जानिथ म्यति दृढता आवूम्
चानि भक्ति हुन्दि जोरः बकवासी बनिथ यि स्तोता बनावूम ॥२१॥

चर्चास्तवः

— ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त माल्यं
मौलौ हटेन निहित महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर शिञ्जित मनोहरमऽम्बिकाया ॥१॥

पाद पिाऽय सुन्दर आनन्द दायक इन्द्राजन आव यथ मुक्तमाल
यम्य सूत्य जीर दिचूथ महिशासुरसूय क्षन मात्रस मन्ज वोत सु पाताल
सुय रोजय पाद चोन रूजितन म्य हृदयस
युय व अम्बिकाय बोज श्रोणि श्रोणि ताल
सुय मनोहर पाद बनितन म्य हेतु जय जय कारुक म्ये हावितन कमाल ॥१॥

सौन्दर्यं विभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
संपत्ति कल्प तरुवस्त्रिपुरे ! जयन्ति ।
एते कवित्व कुमुद प्रकरावबोध
पूर्णेन्द वस्त्वयिजगज्जननि प्रणामा : ॥२॥

यिम प्रणाम सौन्दर्यंकि विलासूक जाये बनिथ थदि ग्रुमार करन इवान
त्रिन भवनन हुन्दि राज सम्पदायि हुन्दि कल्प वृक्ष ही यिम प्रणाम छिय बनान
यिम प्रणाम कविताई रूपि कुमद पोशः फुलरावन बापत चन्द्रम छि बनान
ही जगत जननी वातिनय च्यि म्यानी यिथि ही प्रणाम छुस व च्यिकुन करान ॥२॥

देवि ! स्तुतिव्यतिकरे कृत बुद्धयस्ते
वाचस्पति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति ।
तस्मान्निसर्ग जडिमा कतमोऽहमत्र
स्तोत्रम तव त्रिपुरतापन पत्नि ! कर्तुं मे ॥३॥

च्याज्य तुता फ़रनस प्यट छुन सामर्थं
बृहस्पत त देवता जड़ बनानी
ही चन तापन गालवज्य छुस मूर्ख ब आसिथ
कति सामर्थं ब करः स्तुता चानी ॥३॥

मातः ! तथापि भवतीं भवती व्रताप
विच्छित्तयेस्तुति महार्णवकर्णधारः ।
स्तोतुं भवानि ! सभवच्चरणारविन्द
भक्ति ग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥४॥

ही माता जानिय यि संसारहृ कठिन दुख
चटनः वापत करुम स्तुतां यि चानि
यिहुय स्तुता यथ संसार सागरस
वनि नाव म्यानि म्यि हुन्ज म्यानी
चानि पाद कमल के लोलूचि आविशि
बकवास हयु छुसय स्तुता करानी ॥४॥

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानी
मोहं भिनति भवती भवती रुणद्धिः
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः ॥५॥

ब्रह्मा रुप जगतस करान पैदा चूय
विष्णु रुप पालन करान चूय
रुद्र रुप संहार आखरस करान चूय
मोह दिवान त ब्यय तथ ति गालान चूय
लीलाई यिम चानि वुछान छुस रंग रंग
जय जय कार आसितय चानिन लिलायनय ॥५॥

यस्मिन्मनागऽपि नवाम्बुज पत्र गौरि
गौरि ! प्रसाद मधुरां दृशमादधासि ।
तस्मिन्निरन्तरमऽनङ्ग शराव कीर्णा
सीमन्तिनी नयन संततयः पतन्ति ॥६॥

ही गौरी पम्पोश रंग सफा यस
अमृत नजर छख च आवानो
तस प्यठ नित्यनैम सारिय योगिनीय
काम देवस जन छि वश गछानि ॥६॥

पृथ्वी भुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य
विद्याधर प्रणति चुम्बित पाद पीठः ।
यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणयः स एष
त्वत्पाद पंकजरजः कणजः प्रसादः ॥७॥

उदयन राजस खावि प्यठ करान म्योठ्य
विद्यादर त दिव तस छि आधीन
चक्रवर्ति अहुद ओस तम्यि प्रोवमुत
चानि पाद गरदी हन्दि अनुग्रह किन ॥७॥

त्वत्पाद पङ्कजरजः प्रणिपात पूतै
पुण्यैरऽनलपमऽतिभिः कृतिभिः कविन्द्रैः ।
क्षीर क्षपाकरदुकूल हिमाऽवदाता
कैरपिवाप्ति भुवन त्रितयेऽपि कीर्तिः ॥८॥

ही देवि चान्यन पम्पोश पादन
हन्जि गंदि प्यठ कोर यिमों प्रणाम
तिम बनेय निर्मल उत्तम तेज बुद्धि स्वुसि
दाना उत्तम कवी प्रोव तिमव नाम
दुध चन्द्रमः रीशम वस्त्र व्यियि शीन पाट्य
सफा बनिथ त्रण भुवनन मन्ज बनेय नेकनाम ॥८॥

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्रपूजा
मुद्दीपित प्रियतमा मदरक्त गीतिम् ।
नित्यं भवानि ! भवतीमुपवीणयन्ति
विद्याधराः कनकशैल गुहागृहेषु ॥९॥

कल्प वृक्ष पोशव सूत्य चानि पूजा
लोलः सूत्य छि ग्यवान चानी गीत
नित समीर के गुफा रुपी घरन मन्ज
वायन विद्यादर सोज़ त साज कूति ॥९॥

लक्ष्मी वशी करण कर्मणि कामिनीना
माऽकर्षण व्यति करेषु च सिद्धमन्त्रः ।
नीरन्ध्र मोह तिमिरच्छिदुर प्रदीपो
देवि ! त्वदऽङ्घ्रि जनितो जयति प्रसादः ॥१०॥

चानि चरण कमलः सेवाई हुन्द प्रसाद
वश करान लक्ष्मी त व्यियि सिध्यिन
शक्ति सु प्रावान मोह रुपी गन्यि
मन्य गटः गालान चान्यि सूत्य जन ॥१०॥

देवि। त्वदंघ्रि नखरत्न भुवो मयूखाः
प्रत्यग्र मौक्तिक रुचो मुद मुद्वहन्ति।
सेवान.ति व्यतिकरे सुरसुन्दरीणां
सीमन्त सीम्नि कुसमस्तव कायितं यैः ॥११।

माजि भवाञ्य चानि चरनन हुन्दि नमः रत्न
मुक्त दीप्ती दारान जन किरण
योगिनीय यलि परन प्यिवान च्यि चरनन प्यिठ
नम चमकि प्रजलान मस त सुमः तिमन ॥११॥

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिन दीधिति दीप्ति दीप्तं
मध्ये ललाटमऽमरायुधरश्मि चित्रम्।
हृच्चक्रचुम्बि हुतभुक् कणिकानुरूपम्
ज्योतिर्यदेत दिदमम्ब! तव स्वरूपम् ॥१२॥

माता च्यि मस्तक चन्द्र जन प्रजलवुन
राम राम भद्रन्य धोनि चमकवन्य
हृदयस्त मंज अग्नि ज्योति स्वरुप जन
माजय चोन स्वरुप छुय प्रकाश भासवुन ॥१२।

सिन्दूर पांसु पटलच्छुरितामिव द्यां
त्वत्तेजसा जतुरस स्नपितामिवोर्वीम्।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे विहाय
व्रीडां मृडानि सुदृशस्तमनु भ्रमन्ति ॥१३॥

सिन्दरि गर्दि सुसतुय जुरमुत आकाश
लाछ रंग पृथ्वी आण करिथ जन
युस वुछिय क्षण मात्रस लाज आविथ
तस सिधि माज भवान्य पत दोरान ॥१३॥

मातः। मुहूर्तमऽपि यः स्मरति स्वरूपं
लाक्षारस प्रसरतन्तु निभं भवत्याः।
ध्यायन्त्यऽनन्य मनसस्तमनङ्गतप्ताः
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्वगुणं तरुण्यः ॥१४॥

ही माता युस मूहर्तंस ध्यान करि
चोन स्वरुप लाछि रंग तारि समान
सुन्दर जवान अछ रछ न डलवञि मन समूः
कामनाई ताविमच तस छि सुमरान ॥१४॥

आधार मारुत निरोध वशेन येषां
सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि! वपुस्त्वदीयं
ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्या ॥१५॥

मूला दारुक प्राण बन्द करिथ यिमन
सिन्दरि सूत्य रंगमुत पम्पोश जन
हृदयस मन्ज अथ पम्पोशस प्यिठ
चोन स्वरुप बासान रात क्यहो दिन
तिमन्य पुरुषन हुन्द छि ध्यान दारान
सिद्ध साध देवता त क्यथि सत जन ॥१५॥

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवर्ति
रूपं स्वांऽम्ब ! नवयावक पङ्कपिङ्गम् ।
तेषां सदैव कुसुमायुध बाणभिन्न-
वक्षः स्थला मृगदृशो वशगा भवन्ति ॥१६॥

सूर्यं मण्डलकि प्रकाश वुजली रंग सुस
लाछी रंग सुस यिम चोन ध्यान दारान
कामदेव सन्दि तीरः चचमच वछ सूस
अछ रछ तिमन मातहत छि रोजान ॥१६॥

रूपं तव स्फरित चन्द्र मरीचि गौर
मऽालोकते मनसि वागऽधिदैवतं यः ।
निस्सीम् सूक्ति रचनामृत निर्भरस्य
तस्य प्रसाद मधुराः प्रसरन्ति वाचः ॥१७॥

यिम पुरुष मनस मन्ज चन्द्रम पाठ्य चमक वुन
सरस्वति रुपः चोन ध्यान दारान
हदरोस वानी मधुर अमृत भारथई
नेरी तिमन निर्मल प्रवाह ह्यु जन ॥१७॥

शर्वाणि । सर्वजन वन्दित पाद पद्मे
पद्मच्छद चर्छवि विडम्बित नेत्र लक्ष्मिः ।
निष्पाप मूर्ति जन मानस राज हंसि
हंसि [illegible] विधा जनस्य ॥१८॥

ही पाप गालवनि च्यिय पादय कमलन
सारिय जीव छिय प्रणाम करानी
पम्रोश भूगंके दीप्ती हन्दि पाञ्य
चानी नेत्र कमल छि शूभानि
शुद्ध मनुष्यस छक चित सागरस मंज
राज हंस हिश जन च रोजानी
चूय छक सादकस नाना प्रकारुक
दुःख त दाद आपदाई दूर करानि ॥१८॥

इच्छानुरूपमऽनुरूप गुण प्रकर्षं
सङ्कर्षणि ! त्वमनुसृत्य यदा बिभर्षि ।
जायेत स त्रिभुवनैकगुरुस्तदानीं
देवः शिवोपि भुवनत्रय सूत्रधारः ॥१९॥

ही संकरशनी पनने यच्छाये
यलि छक त्रिगुन स्वरुप पानः दारान
तेलि ही देवी त्रण भुवनन हुन्द
केवल गुरु शेवनाथ छु उपदान
अद सुय शंबू त्रण भुवनन हुन्द
नमोद पाठ्य सूत्रधार बनान ॥१९॥

योयं चकास्ति गगनार्णव रत्नमिन्दु-
र्योयं सुराऽसुरगुरुः पुरुषः पुराणः ।
यद्वामंमऽर्धमिदमऽन्धक सूदनस्य
देवि ! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ॥२०॥

आकाश सुदरस मन्ज रत्नन युसः
शोभा चन्द्रमस छय अनानी
दीवन त असुरन युस गुरु छु मासुद्धनय
भगवानस शक्ति युस दिवानी
युसः महादेव सून्ज छि अर्दाङ्गी सुयः
छक चूव बि छु [illegible] ॥२०॥

ध्याताऽसि हैमव्रति ! येन हिमांशुरश्मि-
मालाऽमलद्युतिरऽकल्मष मानसेन ।
तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमऽनल्प कल्प-
मऽल्पैर्दिनैः सृजसि सुन्दरि ! वाग्विलासम् ॥२१॥

युस सुरी चोन ध्यान निर्मल किरणव सुस
चन्द्रमस समान अन्द्रः शुद्ध मन किञ
ही सुन्दरी तस चः जठ पठ करान पैदः
सरस्वती हुन्द विकास अनुग्रह किञ ॥२१॥

त्वां व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललितेत्यऽपराजितेति
देवि ! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति ॥२२॥

सारिसूय वातिथ च कामना दायक
लक्षमी कला व्यथि माला रुप
दुशमनस प्यठ जय सुस चूय ललिता
छिय वनान च्यिय जया चिय उमा रुप । ॥२२॥

उद्दाम काम परमार्थ सरोज षण्ड-
चण्ड द्युति द्युतिमुपासित षट्प्रकाराम् ।
मोह द्विपेन्द्र कदनोद्यत बोधसिंह-
लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥२३॥

युस कामराज बीजाक्षर पम्पोप इलके
फुलनः वापत सूर्य रुप रोजानी
मूलाधार प्यठ पठ चक्रस मन्ज
उपासी रुप गुस तति आसानी
युस मोह् हूसतीस गालन वापत
ज्ञान रुप सह् गुफी छि रोजानी
तमिसूय भगवती माता त्रिपुराई कुम
गुल्ये गन्डिथ तस छुस प्रणाम करानी ॥२३॥

गरोश बटुकस्तुतारति सहाय कामान्विता
स्मरारिवर विष्टरा कुसुम बाण बाणैर्युता ।
अनङ्ग कुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः
कदम्बवन मध्यगा त्रिपुर सुन्दरी पातुमः ।२४॥

गणेण त भैरवन छय स्तुता च्यि कूरमूच
रति सान कामदेव च्य सेवा कुरवुन
शिवनाथ पान छुय आसन चोनुय
कामदेव पोप वनान सु दारवुन
अङ्ग कौसमव वेयि त्रियव सिधौ च वजिमूच
कदम्ब जंगलस मंज च रोजानी
सुय रूप चोन माज्य हि त्रिपुर सुन्दरी
कल्याण म्य करितनम त राछय म्यानी ॥२४॥

स्वामैन्दवीमिव कलामनु भाल देश
मुद्भासिताम्बर तलामऽवलोकयन्तः ।
सद्यो भवानि ! सुधियः कवयो भवन्ति
त्वां भावनाहितधियां कुलकामधेनुः ॥२५॥

यिग मस्तकस मन्ज चिग चन्द्रम कलाहिश
वुछि चमकाविमती आकाश सुस
ही देवी जलदूय तिम वनान छिय
दाना ब्ययि बडि कविताई सूत्य
छक तिमन दिवान चूय सारिनय मतलबन
चानी बावनायि तिम निर्मल बुज सूस ॥२५॥

उत्तप्त हेमरुचिरे ! त्रिपुरे ! पुनीहि
चेतश्चिरन्तनमऽघौघ वनं लुनीहि ।
कारागृहे निगड बन्धन पीडितस्य
त्वत्संस्मृतौ झटितिमे निगडास्त्रुट्यन्ति ॥२६॥

तोवमुत सुन जन चू चमकान त्रिपुराई
शुद्ध कर मन म्यि पापः खिल म्यानि लोन
संसार रूपि जेलस मन्ज छुस व
कामनाई भेडयन हुन्द छुम म्यि बोर
चानि स्मरनि किञ जलद जलद छयनन म्य वेडि
यलि आसि आरतिस म्यि अनुग्रह चोन ॥२६॥

रुद्राणि ! विद्रुममयीं प्रतिमामिव त्वा
ये चिन्तयन्त्यऽरुणकान्तिमऽनन्य रूपाम् ।
तानेत्य पक्ष्मलदृशः प्रसभंभजन्ते
कण्ठाऽवसक्त मृदुबाहु लतास्तरुण्यः ॥२७॥

ही रुद्राणी युस चानिस स्वरुपस वुछि
रुद्र शकलि सूर्य सन्दि गाह्य चमकान
अपूर्वरुपस यियिसूय ध्यान करि
सुन्दर नजरव सूस अछ रछ जवान
जोरः सूत्य तिम गर्दनि पिठ्य अथ आविं आवि
अन्धि अन्धि दजिथ तस सेवा करान ॥२७॥

तवद्रूपमुल्लसित दाडिम पुष्परक्त
मुंद्भावयेन्मदन दैवतमक्षरं यः ।
तं रुपहीनमऽपि मन्मथ निर्विशेष
माऽलोकयन्त्युरु नितम्ब भरास्तरुण्यः ॥२८॥

गुस चोन ध्यान करि दून पोपः रंग रुग
अविनाश कामराज, बीज अक्षरस
युद्वय रुप किञ आसि युय वदशकल
अछ रछ वुछन जन कामदेव तस ॥२८॥

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धोदृशोस्त्वद्गुण
ग्रामाऽकर्णनरागिता श्रवणयो स्त्वत्संस्मृति श्चेतसि ।
त्वत्पादार्चन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्राऽपि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि मा शाम्यतु ॥२९॥

ही दीवी चानि दर्शनुक अभिलाप
हर दम नेत्रनूय मन्ज म्यि रोजितन
चान्य गुण बोजनुक तमनाः म्यि आस्तिन
हर दमः रोजितन म्यान्यन कनन
च्योन नाम स्मरण चितस मन्ज म्यि गरि गरि
चान्य पाद पूजा म्यानिन अथन
चोन कीर्तन करवन्यि रोजितन म्यि वाणी
उपासना चान्यि कम मत म्यि गछितन ॥२९॥

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरिचन्द्र सहस्र रश्मि
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै ।
वागीश्वरी ! त्रिभुवनेश्वरि ! विश्वमात-
रन्तर्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते ॥३०॥

सरस्वति त्रिपुर सुन्दरि जगत माता
भुवनेश्वरी छक ग्रासवन्य चूय
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सुर्य चन्द्रमः कुमार
वेष्णो गणेश छुय पुजान च्यिय
ग्रन्दर. निवरः वातिथ च त्रिभुवनस सारिसूय
गुलि मण्डिथ म्योन प्रणामं वातिनय चिय ॥३०॥

यः स्तोत्रमेतदऽनुवासरमीश्वरा याः
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
तस्येप्सितं फलति राजभिरीड्यतेऽसौ
जायेत स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम् ॥३१॥

युस यि चोन स्तोत्र परि पृथ दोह लोल सान
या कनव बोजि म्रद बनि तस कल्याण
चक्रवरत राज करन तस पुजा
सारि मतलब तस छि नेरान
मनच्यी कामना सिद्ध तस छि संपदान
सुय छुय योगिनियन हुन्द ज्यादः टोठ बनान ॥३१॥

ॐ नमो महामायायै

—: अथ घटस्तवः :— (तीसरा स्तव)

देवि ! त्र्यम्बक पत्नि पार्वती सति त्रैयलोक्य मातः शिवे !
शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे रुद्राणि कात्यायनि !
भीमे भैरवि चण्डि शर्वरि कले ! कालक्षये शूलिनि !
त्वत्पाद प्रणतानऽनन्य मनसः पर्याकुलान्पाहिनः ॥१॥

ही देवी छख च त्र्युम्बक पत्नी
च्यिय वनान सती च्यिय पार्वती
त्रैलोकिय हून्ज माता भगवती
चूय वर दिवान चूय छख मृडानी
चूय त्रिपुर सुन्दरि चूय रुद्राणी
चूय भयानक रुप चूय शरवरी
चूय चण्डि चूय त्रिशूल दाराणी
चूय कला कालस नाश करानी
आय शरण च्यि पादन विनय किथ छि नमिथूय
व्याकुलताई मन्ज असि रछत चूय ॥१॥

उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक्त मूर्च्छा इव
प्राप्त प्रौढ़मदा इवाऽर्तिविरह ग्रस्ता इवाऽर्ता इव।
ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्योक्तोपाधि विवृद्ध राग मनसो ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥२॥

मचरः त ग्राह मूस जहर किन मूर्छित नशः सूस
विरहन चटिमति चानि आरवर सूस
ही हिमालह पुत्री यिम करन चोन ध्यान
तिम आसवनि छि स्यठाह भाग्यवान
मछ रछ एकागर बनिथ उपादि रछ
राग सूस तसन्दुय ध्यान छि दारान ॥भाव चरणा॥ ॥२॥

देवि ! त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृत स्तं नम-
न्त्याऽजन्म स्फुरदङ्घ्रिपीठ विलुठत्कोटीर कोटिच्छटाः
यस्त्वामऽर्चति सोऽर्च्यते सुरगुणैः यः स्तौति न स्तूयते
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्ति विधुरा ध्यायन्ति सिद्धाङ्गनाः ॥३॥

युस पुरुष अकि लटि करि च्यिय कुन प्रणाम
तसन्जि खावि प्यठ राजः मुकुट दुरनान
युस पुरुष लोलः किञ करि चान्य पूजा
तस पुरुषस पूजान दिवः खिल
युस पुरुष करान आसि चानी स्तुता
देवता तसन्जूय अस्तुति करान
युस पुरुष मन किञ करि चोनुय ध्यान
सुरगचि अछ रछ तस छि स्मरान । ॥आय शरण०॥ ॥३॥

ध्यायन्ति ये क्षणमऽपि त्रिपुरे ! हृदि त्वां
लावण्य यौवन धनैरऽपि विप्रयुक्ताः ।
ते विस्फुरन्ति ललितायत लोचनानां
चित्तैकभित्ति लिखित प्रतिमाः पुमांसः ॥४॥

ही त्रिपुर सुन्दरी युस करि ध्यान चोन
मन्ज मनस अकिसूय क्षण मात्रस
युदवय सु आसिय सुन्दर ताई रुस
व्यथि जवानी रुस व्यथि निर्धन
अष्ट सिद्धिय तस मनचे लभि प्यठ
शकल क्षणन तसन्दुय ध्यान सुरन ॥आय शरण०॥ ॥४॥

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्गमङ्गैर्निजैः
किं वाऽमुं निगलाम्यऽनेन सहसा किं वंकतामाऽश्रये !
तस्येत्थं विवशोविकल्पघटना कूतेनयोषिज्जनः
किं सद्यन्करोति देवि ! हृदये यस्य त्वमाऽऽवतंसे ॥५॥

इंथिस पुरुपस करहा प्रवेश नजरी सूत्य
अचहा अमिसन्धन उस्तखानन
क्या सना न्यन्गलिथ गछना अमिस सूत्य
कुनि किअ पानस सूत्य रटहन
अछ रछ सुन्दर गरि गरि तस कुन
वे रोक पाट्य आदीन सपदन
संसारस मन्ज क्या छु दुर्लभ तस
हृदयस मन्ज यस च पानः फेरान ॥आय शरण॥ ॥५॥

विश्वव्यापिनि ! यद्वदीश्वर इति स्थाणावऽनन्याऽऽश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि ! त्वय्येव तथ्यस्थितिः ।
इत्थं सत्यपि शंवणुवन्ति यदिमाः क्षुद्रा रुजो बाधितु
त्वद्भक्तानऽपि न क्षिणोषि च रुषा तद्देवि चित्रं महत् ॥६॥

ही जगत व्यापिनी युथ शिवनाथस
ईश्वरः नाव जगतस मन्ज वनान
तिथय पाठ्य माज्य भवाञ चिय जगतस मन्ज
शक्ति हुन्द नाव छुय च्यि शूभान
युद्वै ईश्वर भक्तिन संसारस
मञ्ज कुनि कुनि दुःख छु दिवान
आश्चर्य छु माज्य चोन क्रोधस प्यठ ति छखनः
पनन्यन भक्तयन दुख च हावान ॥आय शरण॥ ॥६॥

इन्दोर्मध्यगतां मृगाङ्कः सदृशच्छायां मनोहारिणीं
पाण्डूत्फुल्लसरोरुहासन गतां स्निग्ध प्रदीपच्छविम् ।
वर्षन्तीमऽमृतं भवानि । भवतीं ध्यायन्ति ये देहिन-
स्तेनिर्मुक्तरुजो भवन्ति [illegible] ॥७॥

चन्द्रमस हिश सफा चन्द्रम गह् सुस
फुलिमतीस पम्पोशस प्यिठ चूय
खुश इवनि प्रकाश गह् सुस च श्रासवुन्य
युस करान वर्शु‌न अमृत कुय
यिम यि ध्यान करन तिम बेमारी रस छि रोजान
आपदा छि तिमनूय दूर सपदान ॥आय शरण०॥ ॥७॥

पूर्णेन्दोः शकलैरिवातिबहलैः पीयूषपूरैरिव
क्षीराब्धेर्लहरीभरैरिव सुधापङ्कस्य पिण्डैरिव ।
प्रालेयैरिव निर्मितं तव वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया
चित्तान्तर्निहितार्त्तितापविपदस्ते सम्पदं बिभ्रति ॥८॥

पुणिम चन्द्रम जन अमृत प्रवाह् जन
गछ पिण्ड खीर सुदरुचि लहरः जन
शीनस ह्युु सफा चोन स्वरुप बनाविथ
युस करि ध्यान तन मन लोलः किन
तस छि दूर गछान दुःख आरबर त आपदा
सम्पदा सु प्रावान जन्म जन्मन ॥आय शरण०॥ ॥८॥

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोल्लसन्तीं
त्वां ग्रन्थि पञ्चकभिदं तरुणार्क शोणाम् ।
रागार्णवे बहुलरागिणि मज्जयन्तीं
कृत्स्नं जगद्दधति चेतसि तान्मृगाक्ष्यः ॥९॥

युस साधक करि ध्यान चोन वासवुन
चंचल प्रकाश सुस बिजली समान
पून्च दल चटिथूय बाल सूर्य सन्दि पाठ्य
ध्रुजलि रंग सुस्तुय जन च चमकान
रंग सुदरस मञ्ज फुटमुत सोख्य
जगत जन रंग किअ सुर्खी सान
युस यि ध्यान करि तस योगिनी चितस मंज
वसवुनुय गरि गरि ध्यान छि [illegible] ॥आय शरण०॥ ॥९॥

लाक्षारसस्नपित पङ्कजतन्तु तन्वी-
मऽन्तः स्मरत्यऽनुदिनं भवतीं भवानी ।
यस्तं स्मर प्रतिममऽप्रतिमस्वरूपा
नेत्रोत्पलैर्मृगदृशो भृशमऽर्चयन्ति ॥१०॥

लाछि सूत्य रंगिमत्य पम्पोश तारि ह्यो
प्रथ दोह् युस दारि चोनुय ध्यान
तस कामदेव जानिथ कम योगिनीय
नेत्र रूप पोशव छि पूजा करान । ॥माय शरण०॥ ॥१०॥

स्तुमस्त्वां वाचमऽव्यक्तां
हिमकुन्देन्दुरोचिषम्
कदम्बमालां बिभ्राणा-
माऽऽपादतललम्बिनीम् ॥११

तुता करान छि असि च्यि ही वाकदेवी
चन्द्रमस कोन्द पोशस हिश युस दीप्तमान
शोभवुन्य कदम्ब माल माज्य छुख च दारवुन्य
नाल्य छय च्यि शेरः प्यिठः पादन ताम्य । ॥माय शरण०॥ ॥११॥

मूर्ध्नीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डुत्विषं
वर्षन्तीमऽमृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपि रिन्ध्रेऽपि च ।
प्रच्छिद्रा च मनोहरा च ललिता चाऽति प्रसन्नाऽपिच
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते ! वाक् सर्वतोवल्गति ॥१२॥

कलस प्यिठ चन्द्रम शोभवुन च्यि दोरमुत
पम्पोशस प्यिठ च्रू दीप्ती सोस
विहिथ छक च शोभवून्य ब्रह्मरुन्द्रस मञ्ज
अमृत छटान वड़ि शोभाय सोस
युस यि ध्यान करि चोन ही देवी तस
सरस्वती नेरी मुख वड़ि विकास सोस । ।।आय शरण०।। ।।१२।।

ददातीष्टान्भोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति वपदो
दहत्याधीन व्याधीञ्शमयति सुखानि प्रतनुते ।
हठादऽन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीष्टविरहं
सकृद्ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते ।।१३।।

मतलब छख दिवान दुष्मनन च गालान
आपदायन छख च नाश करान
आधियन जालान व्याधियन शुमरावान
सुख त सम्पदा छक च व्यस्तारान
अन्द्रिम दुःख त दाध्य प्रियविरह च गालान
इम अकि लटि माज्य ध्यान चोन करान
तिम अद कमि न पाप निश छिथ मोकलान
इम अकि लटि माज्य ध्यान चोन करान । ।।आय शरण०।। ।।१३।।

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते चिन्तय-
त्यन्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौत्या श्रयत्यर्चति ।
यश्च त्र्यम्बकवल्लभे ! तव गुणानाऽकर्णयत्यादारा-
त्तस्य श्रीर्न गृहादपैति विजयस्तस्याग्रतो धावति ।।१४।।

युस चोन करि स्मुरण बुज सूत्य युस जानि
विद्यायी किन मोज युस च्य प्राविय
शुद्ध मन किन जपि नाव चोन गरि गरि
लोल नेत्रव सूत्य करि दर्शन
श्रवण किन मनन किन युस विचारि हर वखत
तोता करि च्यानि व्यथि पूजा
गुण व्यवि चानी लोल सान दिन त रात
तमि रुसतुय युस न रोजि अक साथ
लक्षमि छन तसन्दि घरि निश नेरान
जय तस प्रथ वकत ग्रोंठ छु दोरान। ॥माय शरण०॥ ॥१४॥

किं किं दुःखं दनुज दलिनि ! क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुल कमलिनि ! ख्याप्यते न स्तुतायाम् ।
का का सिद्धिः सुरवरनुते प्राप्यति नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम् ॥१५॥

कम सना दुःख छि तिम ही दुखन गालवुन्य
यिम गलन न चाने सुम्रणि सात्य
कुस छि नेक नामी हि कुलस खारवुन्य
युसः न बनि चाने स्तोताई सूत्य
कुस कुस छि सिद्धि ही सिद्ध दात्री
युस न प्राप्त सपदी चानि पूजाई सूत्य
कम कम छि तिम योग ही जगदम्बा
यिम न सिद्ध बनन चानि चिन्तन सूत्य। ॥माय शरण०॥ ॥१५॥

ये देवि ! दुर्धर कृतान्तमुखान्तरस्था
ये कालि ! कालघन पाश नितान्त बद्धाः ।
ये चण्डि ! चण्ड गुरु कल्मषसिन्धु मग्ना
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥१६॥

ह्री देवी यिम महाकाल सन्दिसूय कठिनिस
मुखस मन्जवाग ग'मूत्य
ह्री काली यिम महाकाल सन्जि मुखि
रजि चूरि पाठ्य छि गण्डन आमूत्य
ह्री चण्डी यिम बारीक त कठिनिस
पापकिस सभन्दरस मंज छि फटमूत्य
यलि करण ध्यान चोन त्यलि छख रछान
तिमन मोकलावान भ्ययि तारान चूय। ॥आय शरण०॥ ॥१६॥

लक्ष्मी वशी करणचूर्णं सहो दराणि
त्वत्पाद पङ्कजरजांसिचिरं जयन्ति।
यानि प्रणामिलितानि नृणां ललाटे
लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुरक्षराणि ॥१७॥

माज्य भवान्य लक्ष्मो वश करनस प्यठ
पादूच गर्द चान्य छि ताकत सोस
चानि प्रणाम विजि लगि यिमन ललाटस
पादच गर्द चाञ्य बड़ि निशान सोस
सुय पादच गर्द गालि दुर अक्षर तस
जगतस मन्ज बनि सु जय कार सुस । ॥आय शरण०॥ ॥१७॥

रे मूढाः। किमऽयं वृथैव तपसा कायः परिक्लिश्यते
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्ती क्रियन्ते गृहाः।
भक्तिश्चेदऽविनाशिनी भगवती पादद्वयी सेव्यता-
मुन्निद्राम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मीः पुरोधावते ॥१८॥

ही मूढः क्याजि छुख बे फायदः तप किन्य
पननिस शरीरस तकलीफ दिवान
यज्ञ किञ दान किञ बजि दक्षिनाई किञ
क्याजि छुक घर पनुन खाली करान
गछ शरण माजि शारिकाई प्राव च भक्ति
ह्यि करुण तसुन्दुय पाद सेवन
अद फुलमत्य पम्पोश नेअव सोस
लक्ष्मी च्य ओंठ ओंठ ह्यियि दोरुण। ।।आय शरण०।। ।।१८।।

याचे न कंचन न कंचन वञ्च्यामि
सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्यः ।
श्लक्ष्णं वसे मधुरमद्मि भजे वरस्त्री-
र्देवि हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ।।१९।।

कांसि मंगनः ब्ययि कांसि तार न बाजिय
आरचर आवह करनः कांसि सेवा
जाविल वस्त्र दारह क्षमह मोदरि चीज
अछ रछनूय सूत्य कर ब खेला।
यलि माज्य भवान्य हृदयस मञ्ज म्ये रोजल
त्यलि म्यानि कामनायि सिद्ध सपदन। ।।आय शरण०।। १९।।

शब्दब्रह्ममयि ! स्वच्छे देवि त्रिपुर सुन्दरि
यथा शक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरी ।।२०।।

ही शब्द रूपी निर्मल स्वरूपी
ही देवी ही त्रिपुर सुन्दरि।
कोर यथा शक्ति म्य चाञ्य पूजा
कर स्वीकार ही परमेश्वरी। ।।आय शरण०।। ।।२०।।

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषका
अवस्था शाम्भवीमेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ॥२१॥

रोजितन सुखी माज्य साधक सारी
यिम दुष्ट आसन तिम गलितन।
शिव रूप अवस्था म्यति माज्य बनितन
गुरु देव सदा म्य प्यठ प्रसन्न रोजितन। ॥आय शरण०॥ ॥२१॥

दर्शनात्पापशमनी जपान्मृत्यु विनाशिनी।
पूजिता दुःखदुर्भाग्य हरा त्रिपुर सुन्दरी ।२२॥

चानि दर्शन पाप सारिय छि गलान
चानि जप मृत्यु छु नाश सपदान।
पूजायि किन चोन महिमा ग्यवन किन्य
जीवस दुःख त दुर्भाग्य दूर तस गछान। ॥आय शरण०॥ ॥२२॥

नमामि यामनी नाथ लेखालङ्कृत कुन्तलाम्।
भवानी भवसन्ताप निर्वापन सुधानदीम् ॥२३।

नमस्कार छुस करान यमिस केशस मञ्ज छ्ये
चन्द्रम प्रजलान रात्रो दिन।
संसार दुःखन छल निवाराण चूय
अमृत नदी हन्दि प्रवाह सूत्य जन॥ ! आय शरण०॥ ॥२३॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम्
त्वया तत्क्षम्यतां देवि ! कृपया परमेश्वरि ॥२४॥

मन्त्रहीन आसिथ क्रियाहीन आसिथ
विधिहीन आसिथ यि कैंछा पोरुम।
तथ सारसीय ही परमेश्वरी चूयि
कृपायि किन आरतिस म्य माता बखशुम
आय शरण छ्य पादन विनय किन छि नमिथुय व्याकुलतायि मंज असि रछव चूय ॥२४॥

अथ अम्बास्तव

(चौथा स्तव)

ॐ यामाऽऽमनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येति यांश्रुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
तामऽर्ध पल्लवितशंकर रूप मुद्रां
देवीमऽनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये ॥१॥

यस मनीश्वर आदि प्रकृति मानान
यस वनान विद्या वेद रहस्य जानवून
तस शिव नाथ सून्ज अर्धाङ्गी युसः
शोभाई सुस जगतस छि रछवञ्य
तस आमुत व एकागर चित्त बनिथ
छुस प्यवान तस पादन प्यठ परण ॥१॥

अम्ब ! स्त्वेषु तव तावदऽकर्तृकाणि-
कुण्ठी भवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि ।
डिम्बस्य मे स्तुतिरऽसावऽसमञ्जसाऽपि-
वात्सल्य निघ्न हृदयां भवतीं धिनोति ॥२॥

ही माता चानि स्तुता करनस प्यठ
ब्रह्मा वाणी ति जड़ बनानि
म्य घुरि सून्ज यि स्तुता युद छि टूट फूटय
भावनाई किञ हृदयस चि सुख दिवानी ॥२॥

व्योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुरेखा
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।
निःष्यन्दमान सुखबोध सुधा स्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम ॥३॥

चिदाकाश रुप किञ्य नाद बिन्दरुप किञ
चन्द्रम कला हिश छख च प्रज़लाने
वाणी हुन्द शब्द रूप चोन छु आसवुनं
सुख त ज्ञान अमृित च्यि निश नेरानं
चमकान छक तस मन्ज मनस च पानयं
जगतस मन्ज आसि युस भाग्यवान ॥३॥

आविर्भवत्पुलक संततिभिः शरीरै-
र्निष्यन्दमान सलिलैर्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरूपास्ते ये
पादौ तवाम्ब ! भुवनेषु त एव धन्याः ॥४॥

आसन यस रुम उथदनि शरीरस
ओश आस्यस नेत्रव नेरान
वाणी किन पद परि गिति गछि गछि
पादन च्य आसि युस पूजा करान
तस हयु कुस सना छु त्रैलोकी मन्ज
त्रन भुवनन मन्ज सुय छु भाग्यवान ॥४॥

वक्त्रं यदुद्यतमऽभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदऽपि देवि ! शिरः करोति ।
चेतश्च यस्त्वयि परायणमऽम्ब ! तानि
कस्याऽपि कैरऽपि भवन्ति तपोविशेषैः ॥५॥

मुख यस आसिय उद्योग सुस ही माज्य
चानि स्तुता करनस प्यठ
शेर यसुन्दुय आसि गरि गरि ही माज्य
चिय कुन नमस्कार करनस प्यठ
मन यस लुगमुत आसि माज्य च्यिय कुन
स्मरण करि चोन रात्रो दिन
आसि कांह सु माग्यवान कमितानय खास तपके
पुण्य किञ्य रोजि गरि गरि च्यि शरण ॥५॥

मूलालवाल कुहरादुदिता भवानि !
निर्भंद्य षट्सरसिजानि तडिल्लतेव ।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु-
निःष्यन्दमान परमाऽमृत तोय रूपा ॥६॥

मूलादारः द्रामूच थूर शिः पम्पोश चटिथ
बिजली हृन्दि पाठ्य ह्युर कुन खसान
सहस्र डलसूय मन्ज अचित तोरह नेरान
अमृत वाञ्य रूप बुन बयि छि वातान ॥६॥

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते
मुग्धः कटाक्ष विधिरऽङ्कुरयां चकार ।
धत्ते तदा प्रभृति देवि ! ललाट नेत्रं
सत्यं ह्रियेव मुकुलीकृतमिन्दुमौलिः ॥७॥

यलि जोल कामदेव अख शिवनाथन
भकि कटाक्ष तिथि कूति उपदाविय
तन प्यिठ महादेव मन्ज ललाटुक नेत्र
शर्म किञ्य माटुय नेत्र छु कुपरोविय ॥७॥

अज्ञात संभवमनाकलिताऽन्ववायं
भिक्षुं कपालिनमवास समऽद्वितीयम् ।
पूर्वं करग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ॥८॥

न जानिमति जन्म सुस कुल सुस भिक्षु
नन्गय तं ख्युमि रुसत छुनिथ कल माल
चान्य विवाह ग्रोंठ ही हिमाल पुत्री
कुस ग्रोस जानान शिव सुन्द हाल ॥८॥

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च
भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ ।
वेताल संहति परिग्रहता च शम्भोः
शोभां बिभर्ति गिरिजे ! तव साहचर्यात् ॥९॥

चरम पोशाक शुमशान भस्मा मलिथ
नचान शुमशानन सु भीक्ष मंगवुन
भूत खिलः परिवार ग्रासुवन तस शिवस
शोबान तेली यलि च्यि सूत्य छु पकवुन ॥९॥

कल्पोपसंहरण केलिषु पण्डितानि
चण्डानि खण्डपरिशोरऽपि ताण्डवानि ।
आलोकनेन तव कोमलितानि मातः
लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै ॥१०॥

कल्पान्तुक नाश नचुना त गिन्दुना
तस महादेव सून्ज छि वड़ क्रीडा
सोख्य मु वदलान सम्पदायन मन्ज
यलि आवान तथ च शुभ नजरा ॥१०॥

जन्तोरपश्चिमतनोः सतिकर्मसाम्ये
निःशेष पाश पटलच्छिदुरा निमेषात् ।
कल्याणि ! दैशिक कटाक्ष समाश्रयेण
कारुण्यतो भवसि शाम्भव वेद दीक्षा ॥११॥

जीवस कर्मन सपदिथ शुद्धि
अकि निमेश फांसि समोह तस च गालान
चूय छख दयायि किन गुरु रूप बनिथ तस
शिव शक्ति दीक्षा उपदेश करान ॥११॥

मुक्ता विभूषणवती नवविद्रुमाभा
यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या
एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणां
कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥१२॥

मुक्त मालः जेवर रुद्र माल छुनि छुनि
आसवून्य छख च माज्य शोभायमान
युस पुरुष आसि सन्धया तारकव सुस
चोन स्वरूप युय ह्यु तस बासान
तस पुरुषस त्रिभुवनचि योगिनीय
पांचि बानी वराय कामदेव सुमरान ॥१२॥

ये भावयन्त्यमृतवाहिभिरंऽशुजालै-
राप्यायमान भुवनामऽमृतेश्वरीं त्वाम् ।
ते लङ्घयन्ति ननु मातरऽलङ्घनीयां
ब्रह्मादिभिः सुरवरैरऽपि कालकक्ष्याम् ॥१३॥

ही माता यिम च्यि सुरवुन्य आसन
अमृत रुपः सुख दीवान अण भुवनन
तिम तराण काल मर्यादाय अपोर
यथ तरुन कठ्युन ब्रह्मादिकन त देवन ॥१३॥

यः स्फाटिकाक्ष गुण पुस्तक कुण्डिकाढ्यां-
व्याख्या समुद्यत करां शरदिन्दु शुभ्राम् ।
पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते
मातः ! स विश्वकवितार्किक चक्रवर्ती ॥१४॥

सुठकुच जप माल-भकि अथ दारिथ च्
पुस्तक कमण्डल व्यथि दुन अथन
व्याख्यान्स प्यठ ब्याख अथ लुगमुत
चन्द्रमस ह्यू पम्पोश जन चि आसन
युस युथ ध्यान करि चोन माज्य मन्ज मनस
कवियन हुन्द चक्रवर्त बनान सु जगतस ॥१४॥

वर्हावतं स युत बर्बर केश पाशां
गुञ्जावली कृतगनस्तनहार शोभाम् ।
श्यामां प्रवाल वदनां सुकुमार हस्तां
त्वामेव नौमि शबरीं शबरस्य जायाम् ॥१५॥

मोर पक्षि मुकट सुस च चमकवनि केश सुस
रच: फलि हार सुस च शोभायमान
चमकवूनि मुख सुस त कोमल अथव सूस च
तथ्यि शिकारि वाई रुपस व प्रणाम करान ॥१५॥

अर्धेन किं नवलताललितेन मुग्धे
क्रीतं विभोः परुषमर्धमिदं त्वयेति ।
आली जनस्य परिहास वचांसि मन्ये
मन्दस्मितेन तव देवि ! जडी भवन्ति ॥१६॥

ही महासुन्दरी छक च आसवून्य
मनोहर त सुन्दर नूव थूर: जन
क्याजि हयुतुथन मूलि युथ हयू स्वामी
युस सखत व्ययि कठोर शिव छु आसवुन
व्यसन हन्दि ईथि हास्यि पुरवख वचन
ब्यानि कम असन सूत्य मूढ़ छि तिम: बनन ॥१६॥

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलोऽयं
मायोदधिर्विविध दुःख तरङ्ग मालः ।
आश्चर्यमम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति
त्वद् ध्यान सन्तति महावडवा मुखाग्नौ ॥१७॥

ब्रह्माण्डबुबर खिल मरिथ यि माया सुदुर
दुःख लहरव सूत्य बरिथ आसवुन
आश्चर छु हि माज नाशस छु वातान
योन ध्यान अथ क्युथ छु वाडवाग्नि ॥१७॥

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहारणीति
कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
एका सती भगवती परमार्थतोऽपि
संदृश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव ॥१८॥

दक्ष पुत्री चय मूलादार वासिनि
ह्लथ गुफाई मन्ज छख च रोजानी
कात्यायनी चूय लक्ष्मी च्य व्यय
छख कलावती त भिय चूय भगवती
छख कुनिय प्रासिथ ही माज्यि भवानी
लबन छख इवान बहू रुप नचानी ॥१८॥

आनन्द लक्षणमनाहत नाम्नि देशे
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे ।
प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं
शंसन्ति नेत्र सलिलैः पुलकैश्च धन्या ॥१६॥

आनन्द रुपी ह्लथ चक्रस मन्ज
नाद रुप बनि यस चोनुय ध्यान
अभ्यासः किन अन्तर मुख मन किन
अधि सुस करि ध्यान सुय छु भाग्यवान ॥१६॥

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम् ।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनी त्वमूष्मा ।
निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात् ।२०।

चूय छख माज्य भवान्य चन्द्रमस रोशनी
चूय सूर्यस दीप्ती आसवून्य
चूय छख चेतन्य पुरुषस आसवून्य
चय पवनस मन्ज ज़ल बासान
चय स्वाद पानिस अग्नस शक्ति
च्यि रुस जगत निश सार छु रोजान ॥२०॥

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्ति यदन्तरिक्षं
सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च धत्ते ।
यद्वाति वायुरऽनलो यदुर्दाचिराऽस्ते
तत्सर्वमम्ब ! तव केवलमाज्ञयेव ॥२१॥

ह्यो माता सूर्य चन्द्रम त तारक
आकाशस प्यठ यिम प्रकाश दिवान
शीशनाग युस कुल पृथवी थारान
मेघ यिम रोद जगतस आवान
वायु फेरान अग्न छि जोतान
तिम सारिय चानि हुकुम सूत्य चलान ॥२१॥

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं
वाक् तर्कयो स्त्वमऽसि भूमिरनाम रूपा ।
यद्वाविकासमुपयाति यदा तदानीं
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरी भवन्ति ।२२॥

संकोच यच्छा यलि छय च्यि सपदान
तेलि चि माज्य मन त बुद्ध निर्विकार बनान
यलि विकासस यिवान छख च हि गिरिजे
तेलि चाज्य नाम रूप नन्य छि नेरान ॥२२॥

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य
भ्रूकिङ्करी कृत सरोज गृहाः सहस्राः ।
चिन्तामणि प्रचय कल्पित केलि शैले
कल्पद्रुमोपवन एव चिरं रमन्ते ॥२३॥

ही देवी सुख बापत भाग्यवान
यलि च्य छिय तिम प्रणाम करानी
तेलि चानि बुम्द हरकच तिमन लक्षमि तं
सास बजः ऐश्वरी छि रोजानी
चिन्ता मणि रत्नुक समुह बनावमूतीस
खेलि हन्दिस पहाडस प्यठ तिम खेलानीं
कल्प वृक्ष सुस्तिुय बरिमत्यन बागन
मन्ज तिम यचकाल छि फेरानी ॥२३॥

हन्तुं त्वमेव भवांस त्वदधीनमीशे
संसार तापमऽखिलं दयया पशुनाम् ।
वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्त्या
घर्मं निजं शमयितुं निजयैव वृष्ट्या ॥२४॥

ही माज्य जीवस संसार दुःख सारिय
छिहस चूय नाश करान दयायि किन
दुखन हुन्द नाश च्यि मातहत छु आसवुन
दुःख निवृति छिय च्यि आधीन
यिथ पाठ्य सूर्य छुय पननी गर्मी
शुमरावान पननी वर्षन किन ॥२४॥

शक्तिः शरीरमऽधिदैवतमन्तरात्मा
ज्ञानं क्रिया करणमासन जालमिच्छा ।
ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं
किं तन्नयद्भवसि देवि ! शशाङ्कमौले ॥२५॥

शरीर चूय आसवञ्य शक्ति चूय आसवञ्य
विराट स्वरुप छक आसवञ्यि चूय
जीव आत्मा ध्यान शक्ति क्रिया शक्ति
इन्द्रीय शक्ति आसन शक्ति चूय
इच्छा शक्ति ऐश्वरी परिवार चूय
ग्रहद्यन हन्ज जाय आसवून्य चूय
ज्ञान छख च आसवन्य युस स्वरुप शिव सुन्द
सुय स्वरुप छख परिपूर्ण चूय ॥२५॥

भूमौ निवृत्ति रुदिता पयसि प्रतिष्ठा
विद्यानले मरुति शान्तिरतीतशान्ति ।
व्योम्नीति याः किलकलाः कलयन्ति विश्वं
तासां विदूरतरमऽम्ब ! पदं त्वदीयम् ॥२६॥

पृथवी मन्ज निवरति कला रुप चूय
जलस मन्ज प्रतिष्टा कला रुप चूय
अग्नस मन्ज विद्या कला च आसवुञ्य
पवनस मंज शान्ति कला चूय
आकाशस यिमः कलाय जगत धारान
तिमी निश दूर चोन सुरुप आसवुन
तिमी कलायव निश दोर चोन सुरुप छुय
तिम निश माज्यि दोर रोजान चूय ॥२६॥

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं
नाङ्गी करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये ।
तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल प्रकारा-
स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति ॥२७॥

युत ताम न पाद जोरी चानिय रटन हृदयस
यिम महस करवनि उलट वादी
ही जगत रछिवनि [illegible] तिम शक [illegible]
मूढ माव तिहुन्द नाश कति सपदिय ॥२७॥

यद्देवयान पितृयान विहारमेके
कृत्वः मनः करण मण्डलसार्वभौमम ।
याने निवेश्य तवकारण पञ्चकस्य
पर्वाणि प्रार्वति नयन्ति! निजासनत्वम् ॥२८॥

यिम योगी पुरुष प्राणाभ्यास योग
अभ्यास करि करि यलि प्रावन
इन्द्रय खिल त मन आसिक ज्यूनमुत
तिम सवारी करान पांचन कारनन ॥२८॥

स्थूलासु मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब! यस्याः ।
पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं
सासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम् ॥२९॥

पृथवी तुतः पिव्य मायात्वतस ताम
यिम स्थूल मूर्तिय माज्य छि आसान
कुनि मूर्ति मन्ज ही माज्य भवानी
चान्य हिश विभूती छन बासान
ब्रह्मादिकन ति छुनः वयुष हयू सामर्थं
गुण चान्य ग्यविथ छिन तिम ते केन्हं हयकान
तिमय विभूती हुन्दि गुण करि म्यि गायन
माफी दितम म्य छुस ब आशावान ॥२९॥

कालाग्निकोटिरुचिमऽम्ब षडऽध्वशुद्धा-
वाप्लावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम् ।
श्यामां घनस्तनतटां सकलीकृतौ च
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति ॥३०॥

कल्पान्तो अग्न पाठ्य गह सुस ही माज्य
संसारः नाशस प्यठ च चमकान
सोरुय ब्ययि कायिम करनस प्यिठ
छक चं तेलि अमृतुक वर्शुन करान
यिम शामं रुप सुन्दर चोन ध्यान छि दारान
तिम मांज्य जगतूक गुरु छि सपदान ॥३०॥

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब ! केचि
धानन्मेव कतिचित्कतिचिच्चमायाम् ।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम
साक्षादऽपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव ॥३१॥

केहं छि विद्या किंन्ह छिम आनन्द
केहं छि माया रुप च्यि मानान
केहं जगत माता साक्षात हृद रुग
दयास्वरुप गुरु रुप अस्य च्यि जानान ॥३१॥

कुवलयदलनीलं बर्बरस्निग्धकेशं
पृथुतरकुचभाराक्रान्त कान्तावलग्नम् ।
किमिह बहुभिरुक्तैस्त्वत्स्वरूपपरं नः
सकल भुवन मातः सन्तत सन्निधात्तम् ॥३२॥

कुवलय बर्ग पाठ्य छक माज्य च चमकवुन्य
दोरमुत च्यि छिय माज्य सुन्दर केश
सुन्दर कमर सुंस सीनः बुन नाविथ
ही माज्य आसवुन्य च जगतच ईश
ज्यादः वनियूय कया नेरी हासिल माज्य
सन्मुख म्य रोजतम दितम त्युथ सन्देश ॥३२॥

सकलजननीस्तवः ।

(पाँचवा स्तव)

अजानन्तो यान्ति क्षयमवश्यमन्योन्य कलहै
रमी माया ग्रन्थौ तव परि लुठन्तः समयिनः ।
जगन्मातर्जन्म ज्वरभय तमःकौमुदि ! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम् ॥१॥

न जान वूञ्य मूर्ख पान वञ्य लड्य लड्य
अवश्य पाठ्य नाश मावर्स छि वातानं
यिम मतः वादी मायाई हुन्द नूयं
गण्डनूय फसिथ ईम डुल डुल गछानं
ही जगतमाता असि जन्मुकि ज्वर
भय कि तम कुय चन्द्रम च वासान
आमूत्य शरण छिय सन्मुख ही माज्य
गुल्य गण्डिथ अस्य च्यि कुन प्रणाम छिय करानं ॥१॥

वचस्तर्का गम्य स्वरस परमानन्द विभव-
प्रबोधाकाराय द्युति तुलित नीलोत्पलरुचे ।
शिवस्याराध्याय स्तनभर विनिम्राय सततं
नमो यस्मै कस्मैचन भवतु मुग्धाय महसे ॥२॥

वाणी किञ विचार किञ छुव च माज्य न प्रावनी
छुक च च्यतन स्वरुप परमानन्द
नीलि उतपलः पोशि दीप्ती सुस चुय
शोभायमान व्ययि ज्ञान व आनन्द
शिवस छुय आराधनी जगतस वडावान
ज्ञान क्रिया रुपः के तनः वारि किञ
नमस्कार आसिनय तथ कथताम्य तेजस
सारिनूय मोहुस यम्हर अनान च यमि किञ ॥२॥

लुठत् गुञ्जाहार स्तनभर नमन्मध्यलतिका
मुदञ्चद्धर्माम्भः कण गुणितनीलोत्पलरुचम् ।
शिवं पार्थत्राणप्रवणमृगयाकारगुणितं
शिवामन्वग्यान्तीं शवरमहिमन्वेमि शबरीम् ॥३॥

रच फलि हार चि नाल्य तनः वारि नमिथ्रूय
जावियुल कमर युस च्यि माज्य शोभान
फटिमति गुम सूत्य गुम फियर चि छूभवून्य
नीलि ओतपल पोश रंगः चमकान
अर्जुनस रछने तस दोवस पतः पतः
दोरमुत शिकारी रुप युस चि आसवुन
तथि शिकारीमाई रुपस ही माज्य भवानी
गुल्य गण्डिथ च्यिय आमुत छुसय शरण ॥३॥

मिथः केशाकेशिप्रधननिधनास्तर्क घटना
वहुश्रद्धाभक्ति प्रणय विषयाश्चाप्तविधयः ।
प्रसीद प्रत्यक्षी भव गिरिसुते ! देहि शरणं
निरालम्बं चेतः परि लुठति पारिप्लवमिदम् ॥ ४॥

वहस करवून्य छिय मस कढान अख अकिस
लञ्य लञ्य तिमन पत नाश छु सपदान
स्यिठाह् पुरुप भक्ति किन्य त प्रेम किञ
श्रदाई किञ चाञ्य पूजा करान
ही माज्य प्रकट वन अस्य प्यठ प्रसन्न वन
सन्तुष्ट वन असि रोज वचावान
असि छिय चंचल मन सुस थपि रस्तुय
थप कर असि माज्य नत छि डुलः गछान ॥४॥

शुनां वा वह्नेर्वा खगपरिषदो वां यदशनं
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति ।
अमुष्मिन्निश्वासं विजहिहिममाह्लाय वपुषि
प्रपद्यथाश्चेतः सकल जननीमेव शरणम् ॥५॥

ही मन यथ शरीरस प्यठ न ऐतिबार
छुय खुराख यि अगुक या पंक्षी क्ष्यवान
कमि वक्त कथ जायी किथ पाठ्य कमि तरीक
प्ययि पथर शरीर कर कांह न जानान
म्यानि मन गछ शरण जगतूचि माजि कुन
शरीरच ममता कुनः च जल्द आवान
॥५॥

अनाद्यन्ता भेद प्रणयरसिकापि प्रणयिनी
शिवस्यासीर्यत्त्वं परिणयविधौ देवि ! गृहिणी ।
सवित्री भूतानामऽपि यदुदमूः शैलतनया
तदेतत्संसार प्रणयनमहानाटक सुखम् ॥६॥

आदि अन्त रस व्ययि भेद रस प्रिय स्वरुप
आसिय ति छक शेव सून्ज प्रयम स्वरुप
विव्राह विधी किन हि दिवी छक
तस महादेवसन्ज ग्रुहणी रुप
ही हिमाल पुत्री जीवन करान च पैदः
संसार लीला छि चोन जशन रुप
॥६॥

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति ! सदन्ये विदुरस-
त्परे मातः । प्राहुस्तव सदसदन्ये सुकवयः ।
परे नैतत्सर्वं समभिपद्यते देवि ! सुधिय-
स्तुदेतत्त्वन्मायाविलसितमशेषं ननु शिवे ॥७॥

ही देवी कैंह छिय वनान च्य तत्व रुप
कैंह छिय वनान सत कैंह असत रुप
कैंह छि वनान शदि खुत शुद सुरुप माज्य
कैंह दाना वनान सत असत रुप
कैंह छि वनान अनिर्वाच्य छख च आसुवुन्य
कैंह वनान यि सोरुय छु चोन फुलनः रुप
॥७॥

तांडन्कोटिज्योतिर्द्युति दधित षड्ग्रन्थिगहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टि वपुषा।
किमप्यष्टात्रिंशात्करण सकली भूत मनशिं
भजेधाम श्याममकुचभरनतं वर्बरकचम् ॥८॥

करोर वुजमलि समान चानि दीप्ती
कठिन्यन पन गण्डन चटिथ छक ग्रचान
स्वाद्वार चक्रस व्ययि तोरः नेरान
ग्रमृत वर्षन स्वरूप किञ वसान
३८ कलारुप जगत विकसाविथ
तन बारि नमिथूय केश च्यि चमकान
तथि शाम रुपस ही माज्य भवानी
गरि गरि रोजहा म सेवन करान ॥८॥

चतुष्पत्रान्तःषड् दलभग पुटान्त स्त्रिवलय
स्फुरद्विद्युद्वह्निद्युमणि नियुताभद्युतियुते।
षडश्रं भित्वादौ दशदलमऽथ द्वादशदलं
कलाश्रं च द्वयश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते ॥६॥

चतुशदल कमल मन्ज नीरिथ षठ दलस
त्रिकोनस मञ्ज साढत्रिवार सरपाकार
उजमल चमक जन सास बदि सूर्य जन
शक्ति कुण्डलिणी तती च चमकान
षठ दल चटिथ दश दल पत द्वादशदल
पतः षोडषदलः प्यठ छि नेरान
द्वदल मंज द्रामचि तस ओकुण्डलिनय
हो गिरिजी क्रुस तथ नमस्कार करान ॥६॥

कुल केचित्प्राहुर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः
परे तत्सम्भेदं समभिदधते कौलमऽपरे।
चतुर्णामप्येषामुपरि किमऽपि प्राहुरपरे
महामाये। तत्त्वं तव कथमऽमी निश्चिनुमहे ।।१०।।

कैंह ज्ञानी वनान च्य ३६ तत्वरुप
कैंह ज्ञानी वनान च्य ब्रह्म शैव रुप
कैंह वनान छिय च्य माज्य शिव शक्ति रुप
कैंह वनान अमि खुत थुद छु चोन मुरुप
कैंह वनान थदि खुत थुद कुस्ताल्य रुप
ही महामाया किथ पाठ्य मनि असि निश्चय
कुस्सना अलौकिक छु चोन माज्य स्वरुप ।।१०।।

षडध्वारण्यानीं प्रलयरविकोटि प्रतिरुचा
रुचा भस्मीकृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम।
वितन्वानः शैवं किमपि वपुरिन्दीवररुचिः
कुचभ्याामानम्रः शिवपुरुषकारो विजयते ।।११।।

शि वति सुस जंगल प्रलय कालस प्यिठ
करोर दीप्ती सुस च प्रजलान
पनन्यन भक्तयन यिम चान्यन चरणन
प्यठ थवान मस्तक छक तिमन रछान
शिव सून्ज कुस्ताम्य स्वरुप च्य दीप्ती सुस
ज्ञान क्रिया तनबारि नमित च्य शोभान
शिव सून्ज पुरुषकार छक माज्य च आसवन्य
तम्य शक्ति रुपस म प्रणाम करान ।।११।।

प्रियङ्गु श्यामाङ्गीमऽरुणा तरवासः किसलयां
समुन्मीलन्मुक्ताफल बहुलनेपथ्य कुसुमाम् ।
स्तनद्वन्द्वस्फार स्तवकनमितां कल्पलतिकां
सकृद्ध्यायन्तस्त्वां दधति शिव चिन्तामणिपदम् । १२ ।

पिंगः पोषः पाठ्य श्याम सुन्दर शरीर सूस
युखं वस्त्र छक च दारानी
फोलिमति मुक्त व्यय पोप लिवास सुस
तन बारि नमियूय च शोवानी
ह्री देवी छक च कल्प यूर ग्रासवञ्य
युस अकि लटि ध्यान चोन् दारानी
सुय शिव रुपी चिन्ता मनि रत्न
चानि दयायि किञ छु प्रावानी ॥१२॥

प्रकाशानन्दास्यामविदितचरीं मध्य पदवीं
प्रवीशं तवद्वन्द्वं रवि शशि समाऽख्यं कवलयन् ।
प्रविश्योर्ध्वं नादं लय दहन भस्मीकृत कुलः
प्रसादास्ते जन्तुः शिवमकुलमऽम्ब प्रविशति ॥१३॥

ज्ञान किञ क्रियाई किञ्य फीरिथ सुशमना
मन्दर अचित दुशवनि ग्रास करान
उर्वनादस अचित चितविमर्श अग्न किञ्य
सारनूय चकरन भस्म छिय करान
तमि पत चानि अनुग्रह किञ साधक
अविनाश शिव पदस व्यठ छि बातान ॥१३॥

षडाधारावर्तैरपरिमित मन्त्रोर्मिपटलै-
श्चलन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद् दैवतझषैः ।
क्रमस्रोतोभिस्त्वं वहसि परनादाऽमृत नदीं
भवानि ! ... ... प्रणयिनी ॥१४।

६ चक्र आवलनि निश मन्त्र मुलकव निश
मुद्राई कफि निश यलि च नेरान
कर्म रुप गाडवनिश क्रमकि दरियावनिश
परः नाद अमृत रूप यलि छ्यः वसान
ही माज्य वातान छक नविस दरयावस
शिव रुप चित सुधरस मञ्ज च रोजान ॥१४॥

महीपाथो वाह्निश्वसनवियदात्मेन्दु रविभि-
र्वपुर्भिर्ग्रस्तांशैरऽपि तव कियानऽम्ब ! महिमा ।
अमून्यालोक्यन्ते भगवति ! न कुत्राप्यणुतरा-
मऽवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योम वपुषि ॥१५॥

पृथवी जल अग्न वायु त आकाश
सूर्य चन्द्रम ब्यय जीवआत्मा
अमसव किअ बनोवमुत छि चि पानैः
कोताह छु माज्य मवाञ्य चोन महिमा
चानिस परम आकाशकिस स्वरूपस
मञ्ज छिन यिम ति कुनि वजूदस ईवान ॥१५॥

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोक त्रयमिदं
भवाम्भोधौ मग्नं त्रिगुण लहरी कोटिलुठितम् ।
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम् ॥१६॥

मनुष्य जानवार त देव त्रलोकी
संसार सुदरस मंज छि फटिमूत्य
करोर भज सत रज त्रम लहरन मञ्ज
त्रिगुण मुलकन मञ्ज वुल छि गामूत्य
युदवय यिमन मञ्ज वनि कांसि चोन कटाक्ष
ही माता छु जीव अदः छु वातान
परमानन्द किस स्वरूपस सु जलदुय
परम पद वयाई चानि किम छु आवान ॥१६॥

कलां ग्रह्लामाऽद्यां समयमनुभूति समरसां
गुरु पारस्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथाम् ।
प्रमाणं निर्वाणं परममतिभूतं परगुहां
विधिं विद्यामाहुः सकलजननीमेव मुनयः ॥१७॥

ह्री जगतमाता मुनीश्वर छि च्यि वनान
क्रिया बुद्ध माद्य अनुभव समता
गुरु परमपरा विनय उपदेश शिकथा
प्रमाण निर्मान प्रत्यक्ष त अनुमान
रहस्य ज्ञान मर्यादा व्यय्य विद्याशक्ति ॥१७॥
जगत माता चानी स्वरुप यिम वनान

प्रलीने शब्दौघे तदऽनुविरते बिन्दु विभवे
ततस्तत्त्वे चाष्टध्वनिभिरऽनुपाधिन्युपरते ।
श्रिते शाक्ते पर्वण्यनुकलित चिन्मात्र गहनां
स्वसंविंत्ति योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम् ॥१८॥

शब्द समुह रूकाविथ बिन्द बिमब गालिथ
यष्ट ज्ञान चित आकाशस मन्ज लीन करिथ
तत्वस पिठ आत्म स्वरुपस उपादि रसितीस
नाद रुप पर अमृतस मन्ज रूकाविथ
शक्ति मार्गुक आश्रय छि यिम रटान
चेतन मात्रुक रहस्य - तिम विमर्श करान
स्वाभाविक शिव स्वरुपस तिम प्रावान ॥१८॥
यदिस शिव स्वरुपस तिम स्वाद करान

परानन्दाकारां निरऽवधि शिवैश्वर्यं वपुषं
निराकार ज्ञान प्रकृतिमऽनवच्छिन्न करुणाम् ।
सवित्रीं लोकानां निरतिशय धामास्पदपदां
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम् ॥१९॥

हृदः यस परमानन्द रूप चोन ध्यान
शैंव ऐश्वरी रुप यस मानान
निर्विकार ज्ञान युस हृद रूस बयासुरुप
जीव पैंदः करवुन युस च्ये मानान
तस बराबरुय छुय मोक्ष या समसारं
युस कुनि रुप चानिय सेवा करान
॥१६॥

जगत्कायेकृत्वा तमऽपि हृदये तच्च पुरुषे
पुमासं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्यगहने ।
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदऽपि परमानन्द विभवे
महा व्योमाकारे ! त्वदऽनु भवशीलो विजयते ॥२०॥

जगत कायायि मन्ज छक हृदय च आसवुन्य
हृदयस मन्ज छक आत्म देव रुप
आत्म पुरुषस मन्ज बिन्दु च ठीकित
बिन्दस मन्ज छक परः नादः रुप
नादस मन्ज ज्ञान रुप चोन आसुवुन
ज्ञानस मन्ज परमानन्द विभवरुप
ही जगत माता जय कार तिमनूय
यिम करन चोन अनुभव महाकाश रुप
॥२०॥

विधे विद्ये वेद्ये विविध समये वेद जननि
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेद गुलिके ।
शिवाशे शीलस्थे शिवपदवदान्ये शिवनिधे
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्ति निरूपमाम् ॥२१॥

ह्री क्रिया शक्ति ज्ञान शक्ति कूस्म कूस्म
सिद्धान्त आचाररूप ह्री वेद माता
ह्री विचित्र रूपी छक च जगतूच आद्य
विनय किम प्रावानी च वेदूच सार
शिव अज्ञाय हन्ज चूय सुभाव रूपी
शैव पद दिवान चूय ह्री माता
सुख कुय खजान छख आसवून्य च ह्री माज्य
हृद रुस भक्ति दित म्य हि माता ॥२१॥

विधेर्मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
हरि शूल प्रोतं यदऽगमयदंसाऽऽभरणताम् ।
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब ! गिरिशः
शिवस्थायाः शक्ते स्तदिदमऽखिलं ते विलसितम् ॥२२॥

ब्रह्मा सुन्द कल अलग करिथ तथ कलस
पनने अथुक पात्र बनाविथ
पनने पयकि कुय बनोवुन जेवर
नारायण त्रिशूलस प्यिठ वुरिथ
सखत खुत सख्तय जहर किञ्थ तमीशिवन
होट युस पननुय शोभरावुन
शिवस प्यठ ठेकिमचि अमि शक्ति हुन्द
सोरुय चोनुय विलास छु आसवुन ॥२२॥

विरिञ्च्याख्या मातः ! सृजसि हरिसंज्ञा त्वमऽवसि
त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वरदशाम् ।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनी
त्वमेवैकाऽनेकामऽवसि कृतभेदा गिरिसुते ॥२३॥

ब्रह्मा नाव किञ्य करान च पैदः त्रैलोक्य
नारायण नावः किञ्य छक च तथ रछान
रुद्र नाव किञ्थ चूय छक करान संहार
ईश्वर दशा छक चूय दावान
सदा शिव नाव किञ्य जगतस दिवान मुग्व
पाशन हुन्दि. समूह चूय गालान
ही हिमाल पुत्री चूय कुन्य आसिथ·
ब्युन ब्युन काम्यव किञ अनेक च याज्ञनि ॥२३॥

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायैरपि मनाक्
अशक्ये संस्प्रष्टुं चकित चाकेतैरऽम्ब सततम् ।
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरे
कथं ते विन्दन्ते पदकिसलये पार्वति ! पदम् ॥२४॥

ही माता यिम मुनेश्वर छिय मन किञ
गलिमूत्यव दोषव सुस आसवञ्य
तिम ति खोच्य खोच्य माज्य चाञ्यन पादन
स्पर्श करनस प्यठ छिय न ह्यकवनी
उपनिशद स्वभाव किञ कठिन पाञ्य पकियूय
चानिन चरण कमलन तल जाय प्रावान ॥२४॥

तडिद्वल्लीं नित्यामऽमृत सरितं पार रहितां
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमऽगुण ग्रन्थिगहनाम् ।
गिरां दूरां विद्यामऽवनत कुचां विश्व जननी-
मपर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो भगवतीम् ॥२५॥

उजमलि रुप अपार अमृत नदी रुप
निर्मल चन्द्रम त्रिगुणातमक रुप
वाणी निश दूर चूय शुज विद्या स्वरुप
ज्ञान क्रिया तनव निमित जगत माता
छिय वनान सत जन ही देवी चानि
यिम रुप त मिय अनन्त लक्ष्मी रु। ॥२५॥

शरीरं क्षित्यम्भ्य प्रभृति रचितं केवलमिदं
सुखं दुःखं चायंकलयति पुमांश्चेतन इति ।
स्फुटं जानानोऽपि प्रभवति न देही रहयितुं
शरीराहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते ॥२६॥

पृथवी जल अग्न वायु त आकाश
छुय यिमन पंच भूतन शरीर बनान
सुख दुख अम्युक जानान पुरुष चेतन
नमूद पाठ्य जीव अम्युकं अनुभव करान
ही हिमाल पुत्री शरीरूक अहंकार ॥२६॥
छुन जीव थानि अनुग्रह रुस आवान

पिता माता भ्राता सुहृदऽनुचरः सद्म गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमऽपि यदा मां विजहति ।
तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्ध तमसं
महाज्योत्स्ने मातर्भव करुणया सन्निधिकरी ॥२७॥

मोल माज्य भायी बन्द नोकर त गृहिणी
शरीर पुत्र मित्र ब्यथि गरह ब्यथि धन
यमि वकत आवनम तमि वकत भय मोह
अन्धकारस जल जल चटवनि मन
महा प्रकाश रुप बनिथ दयाई किज माज्य ॥२७॥
नजदीक ठहरिथ सन्मुख म्यि बम

सुता दक्षस्यादौ किल सकल मातस्त्वमुदभूः
सदोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया ।
अनाद्यन्ता शम्भोरऽपृथगऽपि शक्तिर्भगवती
विवादाज्जायासीत्यहहचरितं वेत्ति तवकः ॥२८॥

ह्री जगत माता गुढ़: यली मासूख
दक्षी प्रजापत संन्ज चूय कुमारी
दोष किञ्च छुनथन सुय च्यि त्राविथ
पत बन्येक च हिमालय पुत्री
आदि अन्त रुसतिस तस शिवस निश छखनः
जाह ति वियुन ह्री शक्ति भगवती
विवाह रुस वर दोरथन च्यि शंकर
तिम चाञ्य चरित्र कुस जानीय ॥२८॥

कणास्त्वद्दीप्तीनां रवि शशिकृशानुप्रभृतयः ।
परं ब्रह्म क्षुद्रं तव नियतमाऽनन्द कणिका ।
शिवादि क्षित्यन्तं त्रिवलयतनोः सर्वमुदरे
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवती ॥२९॥

ह्री देवी सूर्य चन्द्रम बेयि अगन
चानि दीप्ती हुन्ज़ छि अख तिम्वरा ।
परं ब्रह्म छुय चान्यि नित्य आनन्द मन्ज़
मासबुन छुय अख लुकुट हिशि लिशः
शिवनाथ सुन्द प्यठ पृथवी तत्वस ताम्य
सारिन्य च कुण्डलिनी रूप रोज़ान ।
आश्चर्य छु माज्य चोन भक्तिन छख चूय
हृदयस मञ्ज प्रकट पाठ्य चमकान ॥२९॥

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं
त्वयैवेच्छत्यम्ब ! त्वमसि निखिला यस्य तनवः ।
गतः साम्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम भवती
तथाप्येकं हित्वा विहरति शिवस्यैति किमिदम् ।३०॥

चानि किञ ज्ञानान चानि किञ इच्छान सुय
चानि किन्य सु शिव जगत छुय बनावान ।
चूय छख तस स्वरूप चाऩ्य किञ छुय सुय
स्वामि भावस प्यठ वातान
च्याने यच्छायि त्यलि सूय च्यानिस
परम आकाशस मञ्ज लीन सपदान ॥३०॥

पुरः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलं गुह्यमऽगुह्यम् ।
दवीयो नदीयः सदसदिलि विश्वं भगवतीं
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनक्षोभ जननीम् ॥३१॥

ब्रोंठ पतः अन्दरः निभरः लूक बुड मुट सूक्ष्म
शिव रूप शक्ति रूप गुप्त नमोद रूप
दूर नजदीक सत असत रूप युस जगत
तथ सृष्टिस्थिती संहार च करवुन्य
जगतच आज्ञाकार च जानन इवान ॥३१॥

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्दीप्तिकणिकाः
पयोधौ कुल्लोलप्रतिहितमहिम्नीव पृषतः ।
उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजैस्तात्त्विक कुलै-
र्भजन्ते तत्त्वौघाः प्रशमम‍ऽनुकल्पं परवशाः ॥३२॥

सूर्य सन्दि किरण जन अग्नचि तिम्बरि जन
समन्द्रन मलकन मन्ज पानय छिख ज़म ।
तिथय पाठ्य शिव प्यठ पृथवी तुतस तान्य
प्रथ कल्पान्तस वथि बथि लय सपदान ॥३३॥

विधुर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिरणुरात्मादिनकरः

स्वभावोजैनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमऽनिलः ।

शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां ।

विकल्पैरेऽभिस्त्वामऽभिदधति सन्तो भगवतीम् ॥३३॥

चन्द्रम विष्णु ब्रह्मा ब्ययि सूर्य
माया स्वभाव मत जीव त आत्मा ।
आकाश वायु शिव शक्ति यिम नाव
भेद किञ्य वेदस प्याट यिम वातान ।
सत जन यिमव नावव किन्य ब्युन ब्युन
ही माज्य भवान्य च्यि छिय सूमरान ३३

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदययादैशिकदृशा

षडध्वध्वान्तौघच्छिदुर गणनातीत करुणाम् ।

परानन्दाकारां सपदि शिवयन्तीमपितनुं

स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवतीम् ॥३४॥

कुदरती दयायि किञ्य गुरु सूञ्जि नजरि किन्य
यिम शक्ति मार्गस मन्ज प्रवेश करान
तिमीनूय शि वति सुस संसार अन्धकार
दयायि किन्य ही माज्य छख च गालान ।
परमानन्द कुय सुख दिवान च तिमनूय
तिमय भाग्यवान माज्य छिय च्यि प्रावान ॥३४॥

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमऽसि समया त्वं समयिनी

त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादिर्गुणगणः ।

अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखलं त्वं किमपरं

पृथक्तत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे ॥३५॥

चूय छख शिव सय चूथ छख शक्ति
चूय समय त तथि ज्ञानवून्य छख चूय।
चूय आत्मा छख उपदेश छख चुय
चूय अनीमादिक अष्ट सिद्धि चूय
चूय अविद्या विद्या जगतुक पदार्थ
चेयि निश कांह तत्व छुनः असि व्युन जानान ॥३५॥

असंख्यैः प्राचीनैर्जननी जननैः कर्मविलया-
द्रुते जन्मन्यन्तं गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम्।
अावाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरऽपि त्वां विदितवान्
नयेयं त्वतं पूजास्तुति विरचनेनैव दिवसान् ॥३६॥

ही माता असंख्य प्रान्यन जन्मन हुन्दि
कर्म गलन किञ्य वुन्य जन्म प्राविथ।
गुरु शिव स्वरूद लबिथ शक्ति स्वरूप प्राविथ
वारह पाट्य माज्य चोन स्वरूप जानिथ।
चान्यि स्तुता त पूजा करवुन व रोजहा
तथि सूत्य छुनहः म दिन दिन कटाविथ ॥३६॥

यत् षट् पत्रं कमलं उदितं तस्य यार्कर्णिकाख्या
योनिस्तस्याः प्रथितमुदरे यत्तदोङ्कारपीठम्।
तस्मिन्नऽन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृतां
श्यामाकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि ॥३७॥

स्वाधिष्ठान चक्रस मञ्ज पठवल
पम्पोश युस छुय माज्य आसवुन।
तथ मन्ज आसवुन युस छु बीजुक कोश
बीज कोशस प्यठ ओमकारुच जाय।
ओमकारुचि जायि प्यठ वास करवुन्य
युस कुण्डलिनी छख तति य रोजान
तस शाम सुन्दर मूर्ति दारवनि
जगत मातायि ज्यिय निश ब स्मरान ॥३७॥

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशांके
सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका ।
वहति कुचभराभ्यां या विनिम्रापि विश्वं
सकलजननि सा त्वं पाहिमामित्यवश्यम् ॥३८॥

पृथ्वी जल अग्न वायु त आकाश
सूर्य चन्द्रम यजमन यिमन आठन ।
छख कुनीर शक्ति ज्ञान क्रिया रूप
तन वारि नमियूय जगत च दारथून्य
सुय छख सारी जगतच चूय माज्ञा
अवश्य पाठ्य रछ असि कर सोन पालन ॥३८॥

समाप्तं

ॐ

ध्यान

काला भ्राभाम कटाक्षैररि कुलभयदां मौलिवद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमऽपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्
सिंहस्कन्धाधिरुढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

ाल प्रवर्लकि पाव्य शाम रूप सुसतुय कठाक्ष किन्य दुशमनन कुलन मय दीवान
ाकस प्यठ चन्द्रम दोरमुत शन्ख चक्र तलवार त्रिशूल अयन मन्ज युसः धाराण
ानेत्र दारवुन्य सहस खसिथ सारिसूय त्रिभुवनस पननि तंजः पूरनावान
ान करिव तस जय नावः सुस दुर्गाय हुन्द देव नमान सिद्धी यछुवुन
सेवा यस करान ॥

ा ऋषि बोले : जब देवी के हाथों महिषासुर सेना सहित मारा गया तो
न्द्र और सब देवता प्रसन्न होकर साष्टाङ्ग दन्डवत करके इस प्रकार भगवती
ी की स्तुति करने लगे ।

ऋषिरुवाच :-

ॐ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या
तां तुष्टुवः प्रणति नम्रशिरो धरांसा
वाग्भिः प्रहर्ष पुलकोद् गमचारुदेहा : ॥१॥

ी देवी यलि मारियक च्यि तिम दुष्ट राक्षिस सेना युसः बलवान
ाणी किन्य प्रसन्न कुरुख च, इन्द्राजन त देवव-कलः नुमराविय कुरख
च्यि प्रणाम
र्ष फिव तिमन चम दम योद वृतलेय सून्दर शरीर मुसि आसि तिम प्रजलान ।

देव्या यया ततमिदं जगदात्म शक्त्या
निश्शेष देवगण शक्ति समूह मूर्त्या
तामऽम्बिकामखिलदेव महर्षिपूज्यां
भक्त्यानताःस्म विदधातु शुभानिसानः ॥२॥

ही देवी य्ये जगत छुय व्यापसुत, सोव्य चार्नी शक्ती सूति छु शोलान। सारिनूय देवन हुंज्जी शक्ती हुन्द समुह छुय माज्य चोन स्वरूप आसवुन यस करान छि पूजा सारी देवता, व्यमि उत्तम ऋषि तमिस माज्य कुन गुल्य गन्डिथ छुस करान प्रणाम तमसूय, सुय माज्य करितनम कल्यान म्योन।

यस्याः प्रभावमऽतुलं भगवानऽनन्तो
ब्रह्मा हरश्च नहि वुक्तुमऽलंबलं च
सा चण्डिकाऽखिल जगत् परि पालनाय
नाशाय चाशुभभयस्यमतिंकरोतु

यमिसुन्द प्रभाव छुय हदः रुस आसवुन, भगवान त शेशनाग छुनः दनिथ ह्यकान ब्रह्मा त शंकर छि न तिम ति चरि पाव्य, ताकत सुंसे महिमा चोन जानान सुय चन्डी देवी रछितनम म्यि, युस सारिसूय जगतस छि पालान दीतनम तिछ शुभ बुद्ध सुय देवी, यमि सुति अशुभ भय नाश सपदान।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेषु लक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा-
तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि विश्वम ॥४॥

भाग्यवान घरन मञ्ज युसः लक्ष्मी रूप, पापी घरण मञ्ज युसः अलक्ष्मी
सत पुरुषन श्रद्धा कुलः पुरुषन लज्जा, शुद्ध पुरुषन बुद्धी रूप रोजानी
पालना करतः सारसूय जगतस माज्य, च्ये छुसय गुलगन्डित प्रणाम करानी ।

किं वर्णयाम तव रूपमऽचिन्त्यमेतत्
किंचाति वीर्यमऽसुर क्षयकारि भूरि-
कि चाहवेषू चरितानि तवादभूतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेव गणादिकेषु ॥५॥

क्या करः वरणन चोन सुरूप ह्यी माज्य, युस रूप आसवुन चोन न सुरनी
क्या करः वरणन चोन भल त सामर्थ, युस राक्षसन छु नाश करानी
कति अनः भुज मञ्ज च्यानी बढ्य चरित्र, राक्षस त देव आश्चरस गछानी ।

हेतु समस्त जगतां त्रिगुणापि दोषैः
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरऽपि पारा
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतम
व्याकृताहि परमाप्रकृतिस्त्वमाध्या ॥६॥

सारी जगतच हीतो छख च ह्यी माज्य, त्रिगुणात्मक जगत युस छु आसवुन
नारायनस शिवस छु न जानून ईवान, माता चोन स्वरूप युस अपार आसवुन
च्यानि अंश निश युस जगत छु उपद्योमुत, चोनुय आसरः तथ छु आसवुन
आद्य प्रकृति च छख ह्यी माता निर्विकार, यदि खोतः थोद चोन स्वरूप आसवुन ।

यस्याः समस्त सुरता समसुदीरणेन
तृप्ति प्रयाति सकलेषु मखेषु देवी
स्वाहासिवै पितृ गणासि च तृप्तहेतुर
उच्चार्यसे त्वं अतेव जनैः स्वधा च ॥७॥

यमि सून्दि सारी मन्त्र परन सूत्य, यज्ञादिकन तृप्ती छि यातान
स्वाहा शब्द किन्य ही देवी चूय, देवन तृप्ती हुन्द कारण बमान।
स्वधः शब्द किन्य ही देवी सारिनूय, पित्र लोकन तृप्ती छय सपयान ।

या मुक्ति हेतुर अविचिन्त्य महा वृत्तात्वं
अभ्यस्यस्ये स्वनियतेन्द्रिय तत्व सारैः
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त समस्त दोशैः
विद्यासि सा भगवती परमाहिदेवी ॥८॥

चूय छख मुक्ति हुन्द कारण माज्य, चूय बडि तत्व सार सुस न स्वरनी
इन्द्रिय रटिथ आसन यलि वृत सूस्य, त्यलि च्यान्य उपासना छि सपदानी
मोक्ष यच्छ वून्य मनीश्वर यिम दोष रूस्य, छख तिमन च विद्या रूप भगवती

शब्दात्मिका सु विमल ऋख यजुषाम निधान-
मुद्गीथ रम्य पद पाठवतां च साम्नाम्
देवेत्रियी भगवती भवभावनाय
वार्ता च सर्व जगतां परमार्तिहन्त्री ॥९॥

शब्द रूप ऋग्य यजु साम वेदुक खजान , नूय पद चूय पाठ चूय प्रनव रूप
संसार पालनाय वापत ही देवि, चूय आसवुन्य छख त्रिनवय वेद रूप ।
जगतुक आरचर गालनः वापत, चूय छख आसवून्य वारता रूप ।

मेधासिदेवि विदताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौरऽसङ्गाः
श्रीः कैटभारि हृदयैक कृताधि वासा
गौरी त्वमेव शशि मौलिकृत प्रतिष्ठाः ॥१०॥

ह्यी देवी यिमो शास्त्रन हुन्द सार जोन, छख तिमन बुद्धि रूप च आमानी
दुर्गा रूप किन्य मुश्किलस तरनी, संसार सागरस च नाव बनानी
लक्ष्मी रूप किन्य नारायणस छख, हृदयस मञ्ज चूय वास करानी
गौरी रूप किन्य चन्द्रम यस कलस, तस शिवनाथस निश च रोजानी। १०

ईषत्सहासममलं परिपूर्ण चन्द्र
बिम्बानुकारिकनकोत्तम कान्ति कान्तम्
अतियद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥११॥

परिपूर्ण चन्द्रम निर्मल चन्द्र बुम्ब ह्यु, चोन मुख सुनुकि पाठ्य श्रोस चमकवुन
असवुन सुन्दर उत्तम मुख चोन, शोभायि सुस आश्चर करवुन
ह्यस डल्य सु मुख वुछिथ महिषासुरसूय, युस श्रोस राक्षुस कूय करवुन।

दृष्ट्वापि देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमु-
द्यच्छशाङ्क सदृशं च्छवियन्न सद्यः
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीवचित्रं
कैर्जीव्यतेहि कुपितान्तक दर्शनेन ॥१२॥

वुन्छथूय च देवी क्रोध सूत्य भरिथूय, उदय सुस चन्द्रमः जन च प्रजलान
प्राण त्राव्य तमि वख्त महिषासुरनुय, कांह आश्चर छुनः तोति सपदान
कुस रोजि जिन्दः मोज्य यथ जगतस मञ्ज, यलि वुछि सु महाकाल क्रोधी बनान

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि
विज्ञातमेतदधुनैवयदस्तमेत-
न्नीतं बल सुविपलं महिषासुरस्य ॥१३॥

ही देवी वुन्य असि प्यठ प्रसन्न बन, छख च माज्य आसवुन्य सोनुय कल्याण
यलि छख सपदान क्रोधी ही माज्य, त्यलि छख एकदम कुलन नाश करान
महिषासुरुन फोज नाशस वातनोवथन, युस फोज तस ओस स्यठा बलवान।

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः
धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदाराः
तेषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना: ॥१४॥

शहरण मञ्ज माज्य तमिसूय छि मानान, धन सम्पदायि सुस तिम छि आसान
तिमनूय यश वडान धर्म न कम गछान, तिमनूय धन्यवाद सारी दिवान
विनय सुस तिमनूय त्रिय सन्तान नोकर, जगतस मञ्ज माज्य तिम भाग्यवान
तिमनूय हमेश छख उदय सुस रोज़ान, यिमन प्यठ छख च माज्य प्रसन्न सपदान

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मान
अत्याधृतः प्रतिदिनं सुकृती करोते।
स्वर्गं प्रयांति च ततो भवते प्रसादात
लोक त्रयोपि फलदाननु देवि तेन ॥१५॥

ह्री देवि यिम अथ दोह छिय करान, धर्मं च काम्य वडि आदर सान
स्वर्गस वसान तिम च्यानि अनुग्रह सूत्य, जगतस मञ्ज छिय तिम भाग्यवान
निश्चय करिथ माज्य त्रिन भवनन मञ्ज, चूय छख भवानी युस फल दिवान

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमऽशेष जन्तो
स्वस्थैः स्मृता मतिमऽतीव शुभांददासि
दारिद्र दुःख भयहारिणिकाः त्वदन्यः
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता ॥१६।

ही देवी च्यानि स्मरनि जीवस, सारी भय छिस नाश सपदान
वारः पास्य यलि सु करि चोनुय स्मरण, त्यलि छख कल्याणूच बुद्ध च तस दिवान
दारिद्र भाव भय व्यथि कठिन दुःख त गम, कुस सना च्यि रस माज्य दूरः
तिमन करान।
उपकार छख करान ही माज्य सारिनूय, हर हमेश कोमल चित सुस च रोज़ान

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवी ॥१७॥

येर ताम नरकस रोजन वापत, यिम जीव स्यठा पाप माज्य छिय करान
तीहन्दी मारन सूती ही माज्य भवानी, सोरुय त्रिभुवन सुख छु प्रावान
यिम छख लडायि मञ्ज मारान च ही माज्य, तिम छिहक स्वर्गस च
वातनावान
यी मानिथ युहुँ निश्चय करिथ छक, ही देवि शुत्रन च गालान

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहीणोषि शस्त्रम् ।
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र पूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेष्व साध्वी ॥१८॥

च्यानि दृष्टि सूत्य क्याजि सपदि न भस्म, सारिनूय राक्षसन त व्ययि दुश्मनन
मगर छख च त्रावान शस्त्र ही माज्य, युथ यिम त्रमि सूत्य शुद्ध सपदन
शुद्ध बनिथ वातन यिम ति स्वर्ग लूकस, युहे हितकार छख तिमन प्यठकरान

खड्ग प्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दु खन्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥१९॥

खड्ग दीप्ती समोह कठिनि चमकि हुन्द समूह, त्रिशूल दीप्ति समूह युस च चमकान
प्रज्वलान छुय चोन मुख तियुय ही माज्य, राक्षसन तथ प्यठ नज़र छनः धरान
चन्द्रम सून्जी पोरल दीप्ती युस, ही माज्य तियुय छिय चोन मुख वूछान

दुर्वृत्त वृत शमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यम तुल्यमन्यैः
वीर्यं च हन्तृहृतदेव पराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥२०॥

खराब चलन हीं माज्य छख बनावान शांत आसवुन यहोय छुय चोनुय स्वभाव
रूप चोन आसवुन ही माज्य न स्वरनी, चियानी रपुक हद छिनः कॉंह लभान
देवन नाशपोमुत युस सामर्थ, छख तिमन पुरशारथ बडावान
शुत्रन पेठ छख ही माज्य भवानी, दयायि युस तीमन दया प्रकट छख कराण

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूप च शत्रु भयकार्यतिहारि कुत्र।
चितं कृपा समर निष्ठुरता च हृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भवन त्रियेऽपि ॥२१॥

कुस करि वरावरी माज्य चानि वीरताय, चोन रुप शुत्रन भय दिवानी
कुनी जायि चोन रुप मनोहर आसवुन, दयायि युस हृदय कुनी जायि छख थवानी
लड़ाई मन्ज़ रुप चोन कठोर माज्य आसवुन, त्रिन लोकन छख वर दिवानी

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्द्धनितेऽपिहत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपासतम
ऽस्माकमुन्मद सुरारि भवं नमस्ते ॥२२॥

सारिनुय दुशमनन लडायि मञ्ज नाश करिय, वथावथन चि ही माज्य त्रैलोकी मारीथक राक्षस लडायि मञ्ज ही माज्य, खारियक चि स्वरगस ही भवानी नाश कुरुथ दुशमनन असि भय दूर करुथ, अस्य चि माता गुल्य गन्डिय प्रनाम करानी

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वने नः पाहि, चापज्यानिःस्वनेनच ॥२३॥

पनने त्रिशुल सूत्य रच्छतः असि हीं माज्य, खड्ग सूत्य रच्छतः असि ही माता घन्टायि शब्द सूत्य रच्छतः असि ही माज्य, कमान्य शब्द सूत्य रच्छतः ही माता

प्राच्यां रक्ष प्रतिच्यां च, चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म शूलस्य, उतरस्यां तथेश्वरी ॥२४॥

पोरि किन रच्छतः अस्य पश्चम किन रच्छतः अस्य, ही चण्डी रच्छ अस्य दक्षण किन्य फिरणाव त्रिशुल पनुन अस्य चोपारी ही माज्य, ही माता रच्छ अस्य उत्र किन्य

सौम्यानि यानि रुपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन्त घौराणि, तैं रक्षास्मांतथाभुवम् ॥२५॥

मुन्दर रुप चियानि माता यिम चि आसवुन, त्रैलोकी मञ्ज फेरानी घोरः रुप कठिन रुप यिम चियानि आसुवुनं, तीमव सूत्य असि त प्रथवी रच्छ चुपारी

खड्ग शूल गदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके
करपल्लव संगीनि, तैरस्मान रक्ष सर्वतः ॥२६॥

खड्ग त्रिशुल यत्यादिक यिम चि आसुवुन, अस्त्र यिम च माज्य छल भाराणी पंगोश अथन मञ्ज रटिथ छल्र व ही माज्य, तीमव सूत्य असि माता रच्छ चुपारी

क्षमास्तुति

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जानेस्तुतिमहो,
न चाहवानं ध्यानं तदपि च न ज्ञानेस्तुतिकथा
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने माता तदऽगुसरणं क्लेश हरनम् ॥

भन्त्र त यन्त्र छुस न कंह् जानान, जानान छुस न माता चोन महिमा
आवाहन त ध्यान छुस न क्रेंह् ति जानान, जानान छुस न माता चानी तुता,
मुधरायि चानी गाज्य छुम न कंह् ति जानान, जानान छुस न माता चोन विलीपन
वोड हिश युक्ती माज्य छुम न जानान, चेय पत पत पकित दुःखन नाश सपदान ॥

विधेरऽज्ञानेन द्रव्यन विरहीनालस्यतया
विधी अशक्यत्वात्तव चर्णयो या चुत्यर्भूत
ततेतद क्षिन्तव्यं जननि सकलोधारिणि शिवे-
कुपुत्रो जायेत कुचिदऽपि कुमाता न भवते ॥

छुस विधी न जानवुन. धन रुस्त त आलस्य, चरण सेवा च्यानि छुम न कंह करान
यछि हालूच सुस छुस व करतम क्षमा, ह्री माता सारिनूय छख उद्धार करान
कुपुत्र छि जगतस मञ्ज पैदः सपदान, .माता कुमाता जांह्ति छनः बनान ॥

प्रथ्यिव्या पुत्रास्ते, जननि बुहवैसन्ती सरलाः
परम तेषां मध्य-विर्लतरलोहं तव स्वतः ।
मध्य योयं त्यागः समुचित्तं इदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायीते, कुचिदऽपि कुमाता न भवते ॥

माता प्रथिवी प्यठ सिठाः च्य मञान तिमन मञ्ज वयि योन छुमय नाभकार
छख म्य आवान माता छुय न च्यि यी जायिज, ह्री पार्वती यांनः छख विचारान
कुपुत्र छि जगतस मञ्ज पैदः सपदान, माता कुमाता जांह ति छिनः बनान

जगतमातर्माताः तव चरण सेवा न रचिता
न वादत्तं देवे द्रव्यनंपि भोयस्तव मया ।
तथापि त्वं सनेहं, मयि निरुपममयत प्रकरुशि
कुपुत्रो जायीते कुचिदपि कुमाता न भवते ॥

ही जगत माता च्यान्य चरण सेवा, न कुरुम पत कुन न वुन्यकिन कराव
च्यानि वाँपत खर्च कुनी कुरुम न भजतान्य, वुनकिन ति धन च्य पत छुस न खचान
तोति छन्न चूय मु माता यस छु म्योन हद रुस्त, मुहोबत त युसः छम म्यि
गरि गरि रछान

कुपुत्र छि जगतस मन्ज पैदः सपदान, माता कुमाता जांह ति छनः बनान ।

परि त्यक्ता देवान विविदविद सेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेऽधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानींचिदमातः तव यदि कृपानापि भवता
निरालंबो लंबोधर जननि कं यामि शरणम्

सारिनूय देवन हुन्ज सेवा म्ये त्राव, सपुदमुत छस व माज्य स्यठा व्याकुल
८५ वरीह गुजरावि म्ये उम्रि हुन्दि, सपुदमुत छुस व माज्य स्यठा निर्बल ।
वून्य युदवै म्यि वनि न च्यानि कृपा ही माज्य, थपि रस छुसय व माज्य कस
गछ शरण ।

चिता भस्मालेपो घरलमशनंध्यकपट धुरो
जटा धारी कण्ठे भुजगपति हारेपशुपते
कपाले भोतेष्व - भजति जगतइषैकपदवीं
भवाने त्वत पाणी ग्रहण परिपाट्य फलम इदम् ॥६॥

चिता वस्मा मलिय यस जहर छुय खुराख, नग्नै त कल मालः नाल्य भावान
वासुक हृटि यस युस जटा छु धाराल, मोत यस स्वामी पनुन छि मानान
सुयं शिव जगतकिम स्वामी भावस, ही माता च्यानि अथवासः छु वातान ।

न मोक्षस्याकान्क्षा न च विभवः वाञ्चापिच न मे
न विज्ञानानऽपीक्षा, शशिमुख सुखेचापि न पुनः
अतस्ताम समयाचे, जननि जननं यातु मुमवै
मृडानी रुद्राणी, शिव शिव भवानीति जपतः ॥७॥

छम न माज्य मूक्षिच कांक्षा आसवुन्य, बयि छम न विभवूच ति माज्य कांह यछा
ज्ञानुच अपेक्षा छम न माज्य म्य आसवुन्य, सुख यच्छा ति छुसन माता कांछान
छुस व माता चिय मन्यान जिन्दगी गुजारहा, शिव शिव भवानी जप करान-करान ॥

छुस ... न ...
यछि... च
कुपु...

मुद्रक: दुर्गा प्रिंटिंग प्रेस,

चिता वस्मा मलिथ यस जहर छुय खुराख, नन्गै त कल मालः नाल्य भावान
वासुक हटि यस युस जटा छु धारान, भोत यस स्वामी पनुन छि मानान
सुयं शिव जगतकिम स्वामी भावस, ही माता च्यानि प्रथवासः छु वातान ।

न मोक्षस्याकान्क्षा न च विभवः वाञ्चापिच न मे
न विज्ञानानऽपीक्षा, शशिमुख सुखेचापि न पुनः
अतस्ताम समयाचे, जननि जननं यातु मुमवै
मृडानी रुद्राणी, शिव शिव भवानीति जपतः ॥७॥

छम न माज्य मूक्षिच कांक्षा आसवुन्य, वयि छम न विभवूच ति माज्य काँह यछा
ज्ञानूच अपेक्षा छम न माज्य म्य आसवुन्य, सुख यच्छा ति छुसन माता कांछान
छुस व माता चिय मन्गान जिन्दगी गुजारहा, शिव शिव भवानी जप करान-करान ॥

छुस [illegible] जा[illegible]
यछि[illegible] म[illegible]
कुपु[illegible]

मुद्रकः दुर्गा प्रिंटिंग प्रेस,

AMRIT KUND PUKHRIBA...

HARIPARBAT, SRINAGAR
BRANCH : JAMMU

PRESENTS

...ANCHESTAVI

WITH

...ATE INTO KASHMIRI LANGUAGE

... SARAF (DHAR)

AVAILABLE AT

SHARDA KUNJ

H. NO. 169, SEC 4 S.B.I. LANE, PAMPOSH COLONY,
JANIPUR, JAMMU

DURGA PRINTING PRESS
ROAD JANIPUR, JAMMU PH.: 539863

PRICE :